''सामाजिक–सांस्कृतिक परिवर्तन में जनमाध्यमों की भूमिका एवं उनका प्रभाव : एक अध्ययन (राजस्थान की मीणा जनजाति के विशेष सन्दर्भ में)''

बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय

(केन्द्रीय विश्वविद्यालय), लखनऊ

कीं डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी (पीएच.डी.) (जनसंचार एवं पत्रकारिता)

उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध–सार

शोध निर्देशक

प्रो. गोपाल सिंह

जनसंचार एवं पत्रकारिता

विभाग

शोधार्थी

चन्द्र मोहन मीणा

नामांकन संख्या :

1309/16

जनसंचार एवं पत्रकारिता विभाग

सूचना विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विद्यापीठ

बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय (केन्द्रीय विश्वविद्यालय)

विद्या विहार, रायबरेली रोड़, लखनऊ –226025 (उ.प्र.)

2022

शोध–सार

प्रस्तावना

मानव सभ्यता की शुरूआत से ही मनुष्य अपने विचार या संदेश दूसरों तक पहुंचाने के लिए विभिन्न सम्प्रेषण के साधनों का प्रयोग करता रहा है। मनुष्य अपने विचार या संदेश ही दूसरों लोगों तक नहीं पहुंचाता है बल्कि अपनी संस्कृति के मूल्यों, विश्वासों एवं परंपराओं का भी संचार करता आ रहा है। इस प्रक्रिया को पूरा करने वाले जनसंचार के अनेकानेक संचार साधन भी खोजता रहा है और आधुनिक जनसंचार माध्यमों के आविष्कार तक पहुंच गया है। आधुनिक जनसंचार माध्यमों में रेडियो, टेलीविजन, समाचार–पत्र, पत्रिकाएँ, कम्प्यूटर, मोबाईल, इंटरनेट एवं न्यू मीडिया आदि को शामिल किया जा सकता हैं। इन आधुनिक कहे जाने वाले जनमाध्यमों से विभिन्न प्रकार की सूचनाएँ, संदेश, विचार एवं अभिव्यक्तियों को समाज के एक बड़े हिस्सें तक बहुत कम समय में पहुंचाना संभव हो गया हैं। इन जन माध्यमों के द्वारा प्रस्तुत की जाने वाली विषय–वस्तु को इनके सम्पर्क में आने वाले सभी लोग देखते, सुनते, या पढ़ते हैं। जिससे उनके जीवन के प्रत्येक क्षेत्र पर इन जनमाध्यमों की विषय–वस्तु का प्रभाव पड़ना भी स्वाभाविक हैं, साथ ही इन जनमाध्यमों की विषय–वस्तु का उनके सामाजिक–सांस्कृतिक सुधार, जागरूकता एवं उत्थान में भूमिका का होना स्वाभाविक प्रतीत होता है। इन जनसंचार माध्यमों के अध्ययन का एक महत्वपूर्ण पक्ष सांस्कृतिक अध्ययन भी है। जनसंचार के विभिन्न माध्यमों से जो संदेश, दृश्य, श्रव्य एवं मुद्रित रूप में संप्रेषित होते हैं, वे भौतिक उत्पादन ही नहीं बल्कि सामाजिक–सांस्कृतिक उत्पादन भी होते हैं। जनमाध्यमों के सामाजिक–सांस्कृतिक अध्ययन का आशय यह समझना है कि इन संदेशों से जनजातीय समुदाय के सामाजिक–सांस्कृतिक जीवन पर किस तरह का प्रभाव पड़ता है और ये संदेश अपने निर्माण की प्रक्रिया में सामाजिक–सांस्कृतिक स्वरूप के विभिन्न रूपों एवं पक्षों को किस तरह प्रेरित एवं प्रभावित करते हैं।

भारत एक विशाल देश है, जहॉ अनेक प्रकार की विविधताएँ देखीं जा सकती हैं, यहॉ अनेक धर्म, मत, सम्प्रदाय, पंथ, जाति, प्रजाति एवं विविध आदिवासी समुदायों के लोग निवास करते हैं। देश के दुर्गम पहाड़ी एवं बीहड़ वन प्रदेशों में रचे–बसे आदिवासी समुदाय के लोग अपनी जीवन शैली, सामाजिक–सांस्कृतिक आभा एवं अपने परम्परागत विश्वासों, मूल्यों एवं मान्यताओं को आज भी अक्षुण्य एवं मौलिक बनाये हुए हैं। हमारे देश का सांस्कृतिक वैभव आज तक इन्हीं आदिवासी समुदायों के लोगों द्वारा जीवित हैं।

संसार भर के अधिकांश देशों में आदिवासी समूह निवास करते हैं। आदिवासी से अभिप्राय देश के प्राचीनतम या मूल या देशज या प्रथम निवासियों से है, जो कि उन्नति के पथ की ओर अग्रसर नहीं हो पाए एवं

देश के कथित मुख्यधारा के समाज से कट गए और कालांतर में पिछड़ते चले गए। इनकों विश्व भर में अलग–अलग नामों से पुकारा जाता है, इन्हें 'जिप्सी', जनजाति, इंडिजिनस, ट्राइब, आदिवासी, एबओरिजन, एमिनिस्ट, जंगली, वनवासी, गिरीजन, मूलनिवासी, देशज, प्रकृतिपुत्र, भूमिपुत्र एवं अनुसूचित जनजाति जैसे अन्य समकक्ष नामों से पुकारा जाता हैं। इन आदिवासी समुदायों की संस्कृति से हमें किसी भी देश की मूल प्राचीन सांस्कृतिक धरोहर के दर्शन होते हैं, जो आज मृतप्राय सी हो गई है। इस प्रकार आदिवासी समुदायों की अपने देश में विशिष्ट पहचान, संस्कृति एवं सामाजिक व्यवस्था है, परंतु विकास की कथित मुख्यधारा से कटे होने के कारण ये अल्पविकसित रह गए एवं आर्थिक रूप से समृद्ध नहीं हो पाए। इन्हीं आदिवासी समुदायों में से एक मीणा आदिवासी समुदाय है, जिसका मुख्य रूप से राजस्थान, मध्यप्रदेश आदि राज्यों में निवास है। राजस्थान के इस मीणा आदिवासी समुदाय की जनसंख्या अन्य आदिवासी समुदायों की तुलना में सबसे ज्यादा हैं। आदिवासी समुदाय के लोग अपने जन्म से लेकर मृत्यु तक विभिन्न सामाजिक–सांस्कृतिक परंपराओं, रीति–रिवाजों का अपनाये रखते हैं। मीणा समुदाय के अपने विशिष्ट रीति–रिवाज हैं, जिन पर अन्य समाजों की संस्कृतियों का प्रभाव भी पड़ने से उनका मूल स्वरूप न्यूनाधिक मात्रा में बदल रहा हैं। यहीं इन्हें अपनी पहचान के साथ–साथ इनके निवासित क्षेत्र की पहचान भी करवाती है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में राजस्थान की मीणा जनजातीय समुदाय की परंपरागत सामाजिक–सांस्कृतिक व्यवस्था पर जनमाध्यमों (विशेषकर टेलीविजन) के प्रभावों एवं उनकी भूमिका का पता लगाने का प्रयास किया गया है। इसके लिए मिश्रित निदर्शन शोध प्रविधियों का प्रयोग किया गया है जिनमें सरल यादृच्छिक निदर्शन प्रविधि, उद्देश्यपरक प्रविधित, बहुचरणीय प्रविधियों के साथ ही विवरणात्मक, क्रॉस सेक्शनल एवं शोध सर्वेक्षण प्रविधियों की मदद ली गई हैं। शोध के उद्देश्यों एवं उपकल्पनाओं मीणा जनजातीय सुदाय में टेलीविजन के अलावा अन्य जनमाध्यमों की स्थिति एवं पहुंच, जनमाध्यमों (टेलीविजन) को देखने के व्यावहारिक स्वरूप, मीणा जनजातीय समुदाय के परंपरागत सामाजिक–सांस्कृतिक व्यवस्था में परिवर्तन करने में जनमाध्यमों (टेलीविजन) की भूमिका एवं प्रभावों का अध्ययन शामिल किया गया है। इन शोध उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए आंकड़ों का संकलन एथनोग्राफिक अध्ययन के अंतर्गत साक्षात्कार–अनुसूची, गैर–सहभागी अवलोकन, अनौपचारिक वार्तालाप, रिकॉर्डिंग एवं डायरी में तथ्यों को दर्ज किया गया है। जिससे शोध उद्देश्यों एवं उपकल्पनाओं के संबंध महत्वपूर्ण तथ्य प्राप्त हो सके हैं।

प्रस्तुत शोध अध्ययन राजस्थान की मीणा जनजातीय समुदाय पर किया गया है। राजस्थान सरकार के जनजातीय क्षेत्रीय विकास विभाग द्वारा राजस्थान की जनजातियों को पांच विकास क्षेत्रों 1. अनुसूचित क्षेत्र, 2. माडा क्षेत्र, 3. माडा कलस्टर क्षेत्र, 4. बिखरी हुई जनजाति क्षेत्र एवं आदिम सहरिया क्षेत्र में विभाजित किया गया हैं। इनमें से माडा क्षेत्र के अंतर्गत मीणा जनजाति का बाहुल्य हैं। इसलिए निदर्शन प्रविधियों के द्वारा इस क्षेत्र में शामिल जयपुर जिले की दो तहसीलों बस्सी एवं जमुवारामगढ़ के कुल 40

गांवों में से कुल 646 उत्तरदाताओं को शोध अध्ययन के लिए चुना गया हैं। जिससे सम्पूर्ण माडा क्षेत्र की मीणा जनजातीय समुदाय का प्रतिनिधित्व हो सकें।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोध में शामिल उत्तरदाताओं की सामाजिक–सांस्कृतिक स्थिति का पता लगाने के साथ ही उनके जनजातीय समुदाय में टेलीविजन के अलावा अन्य जनमाध्यमों समाचार–पत्र, पत्रिका, रेडियो, इंटरनेट, मोबाईल आदि की पहुंच का पता लगाना, साथ ही मीणा जनजातीय समुदाय के सामाजिक–सांस्कृतिक विकास, सुधार एवं उत्थान के अंतर्गत उनके शिक्षा, स्वास्थ्य, आर्थिक, राजनैतिक, व्यावसायिक विकास में टेलीविजन की भूमिका एवं उसके मीणा जनजातिय समुदाय के सामाजिक–सांस्कृतिक परिवर्तन पर प्रभावों में उनके जीवन शैली, रीति–रिवाजों, मृत्यु संस्कार, जन्म संस्कार, विवाह संस्कार, मेलों, उत्सवो, त्यौहारों, लोककला, लोकगीतों, लोकनृत्य, सामूहिकता की भावना आदि पर सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभावों का अध्ययन करने का प्रयास किया गया हैं।

प्रस्तुत शोध अध्ययन को सात अध्यायों में विभाजित किया गया है। प्रथम अध्याय में आदिवासी की परिचय, वर्गीकरण, जनजातीय जनसंख्या की स्थिति, शोध में प्रयुक्त अवधारणात्मक शब्दों की विवेचना, शोध प्रविधि आदि का वर्णन किया गया है, द्वितीय अध्याय में शोध क्षेत्र का परिचय के अंतर्गत माडा क्षेत्र की जनजातीय जनसंख्या का संक्षिप्त वर्णन किया गया है, तृतीय अध्याय में शोध विषय से संबंधित साहित्य की समीक्षा की गई है, चौथे अध्याय में मीणा जनजाति का ऐतिहासिक परिचय देने के साथ ही मीणा जनजातीय समुदाय की परंपरागत सामाजिक–सांस्कृतिक संरचना का संक्षिप्त विवरण दिया गया है, पांचवे अध्याय में जनमाध्यमों (विशेषकर टेलीविजन) का ऐतिहासिक विवेचन किया गया हैं, छठे अध्याय में मीणा जनजातीय समुदाय में जनमाध्यमों की पहुंच, मीणा जनजातीय समुदाय की परंपरागत सामाजिक–सांस्कृतिक व्यवस्था में परिवर्तन लाने में जनमाध्यमों की भूमिका एवं उनके प्रभावों से संबंधित साक्षात्कार–अनुसूची, गैर–सहभागी अवलोकन एवं अनौपचारिक वार्तालाप के माध्यम से संकलित आंकड़ो, आरेखों का विवेचन एवं विश्लेषण का समावेश किया गया हैं। अंतिम अध्याय के अंतर्गत शोध अध्ययन का सारांश, निष्कर्ष, परिणाम एवं सुझावों का संक्षिप्त विवरण दिया गया हैं।

महत्वपूर्ण शब्दावली : सामाजिक–सांस्कृतिक परिवर्तन, जीवन शैली, पारम्परिक रीति रिवाज, शिशु जन्म संस्कार, विवाह संस्कार, मृत्यु संस्कार, परम्परागत त्यौहार एवं उत्सव तथा टेलीविजन की विषय–वस्तु (विशेषतः समाचार, धारावाहिक, सांस्कृतिक, कृषि, फिल्म, स्वास्थ्यप्रद, संगीत, नृत्य, शैक्षणिक, खेल, मनोरंजनपरक, हास्यप्रद।

शोध अध्ययन का सारांश – प्रस्तुत शोध अध्ययन के प्रथम अध्याय शोध की सैद्धांतिक रूपरेखा के अंतर्गत भारत में जनजातियों की स्थिति, वर्गीकरण, परिभाषा, अर्थ, एवं राजस्थान में जनजातियों की स्थिति के साथ ही शोध में प्रयोग किये गये अवधारणात्मक शब्दों, शोध प्रविधि एवं शोध क्षेत्र का परिचय के अंतर्गत

शोध प्रविधियों, उद्देश्यों, उपकल्पनाओं, सर्वेक्षण क्षेत्र, उत्तरदाताओं का चयन, मात्रात्मक विधियों एवं शोध की सीमाओं का विवेचन किया गया हैं। जिसको संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है – भारत को प्रजातियों एवं जनजातियों के मेल्टिंग पॉट के रूप में वर्णित किया जाता रहा है। भारतीय भूखण्ड एशिया महाद्वीप के दक्षिणी भाग में स्थित है। भारत का कुल क्षेत्रफल 32,87,263 वर्ग कि,मी, में उत्तर से दक्षिणी विस्तार 3,214 कि. मी., पूर्व से पश्चिमी विस्तार 2,933 कि.मी., भू–सीमा 15,200 कि.मी. है। भारत के उत्तर में वृहत हिमालय पर्वत है तो वहीं दक्षिण भारतीय प्रायद्वीप के पूर्व में बंगाल की खाड़ी तथा अंडमान निकोबार सागर, पश्चिम में अरब सागर तथा लक्षद्वीप सागर एवं दक्षिण में हिन्द महासागर है। भारत में आदिवासी समुदाय के लोग देश के लगभग 19 प्रतिशत भाग में निवास कर रहे हैं। भारत की 1971 की जनगणना के अनुसार कुल जनसंख्या का 22 प्रतिशत भाग अनुसूचित जनजातियों का था, जो 1981 में बढ़कर 23. 5 प्रतिशत हो गया। इसमें 1.5 प्रतिशत की वृद्धि हुई। देश में केवल अनुसूचित जनजातियों की कुल जनसंख्या 1991 की जनगणना के अनुसार लगभग 8.6 प्रतिशत रह गई थी। यही स्थिति वर्ष 2001 व 2011 में भी है। वर्ष 1991 की जनगणना के अनुसार राजस्थान में जनजातियों की जनसंख्या कुल जनसंख्या की 12.44 प्रतिशत थी। 1971 में राजस्थान की कुल जनसंख्या 2,57,65,806 थी, जिसमें जनजातियों की जनसंख्या 31,25,506 थी, जो कुल जनसंख्या का 12.13 प्रतिशत था। वर्ष 1981 एवं 1991 की जनगणना में कुल जनसंख्या बढ़कर क्रमशः 3,42,61,862 एवं 4,40,05,990 हो गई, वहीं जनजाति की जनसंख्या बढ़कर क्रमशः 41,83,124 एवं 54,74,881 हो गई, जो कुल जनसंख्या का 12.21 प्रतिशत एवं 12.44 प्रतिशत हो गई। 1971 की अपेक्षा 1981 में जनजाति जनसंख्या में 0.08 प्रतिशत एवं 1991 में 0. 31 प्रतिशत की वृद्धि हुई। वर्ष 2001 की जनगणना के अनुसार राज्य में 70,97,706 व्यक्ति अनुसूचित जनजाति के थे, इसमें से 36,50,982 पुरूष एवं 34,46,724 महिलाएँ थी। इस प्रकार राज्य में 12.56 प्रतिशत जनजाति के व्यक्ति थे जो 1991 की तुलना में 0.12 प्रतिशत अधिक थे। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार राज्य में कुल अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या 92,38,534 है।

राजस्थान के संबंध में अनुसूचित जनजातियों की सूची – भील तथा इसकी उपजाति भील गरासिया, ढोली भील, डूँगरी भील, डूँगरी गरासिया, मेवासी भील, रावल भील, तड़वी भील, भागलिया, भिलाला, पावड़ा, वसावा, वसावे। भील–मीणा। डामोर व इनकी उपजाति डामरिया। धानका ताड़वी, तेतड़िया बालवी। गरासिया (राजपूत गरासिया को छोड़कर)। कथोड़ी व दूसरी उपजाति कतकड़ी, ढ़ोर कटकड़ी, सोन–कथोड़ी, सोन–कतकड़ी। कोकना, कोकनी, कूकना। कोलीढोर, टोकरे, कोली, कोलचा, कोलघा। मीणा। नायकड़ा और दूसरी उपजाति नायका, चोलीवाला नायका, कापड़िया नायका, मोटा नायका, नाना नायका। पटेलिया। सहरिया, सहारिया।

इनमें से प्रमुख आदिवासी जनजातियॉ, जिनका जनसंख्या के आधार पर महत्वपूर्ण स्थान है, वे हैं–मीणा, भील, गरासिया, सहरिया, डामोर, कथोड़ी। इनमें से सहरिया ऐसी जनजाति है जो अभी भी अपने अत्यधिक

प्राचीन परिवेश में ही है और जिसे 'आदिम जाति' कहा जा सकता है। राजस्थान के आदिवासियों में मीणा आदिवासियों का स्थान जनसंख्या के आधार पर प्रथम है। श्री चन्द्रराज भंडारी अपने ग्रंथ ''भगवान महावीर'' में लिखते हैं कि– ''मत्स्य राज्य कुरू'' के दक्षिण और यमुना के पश्चिम में था और यहॉ के अधीश्वर मेना (मीणा) कहलाते थे।'' 'मीणा' शब्द 'मीन' शब्द का ही बिगड़ा हुआ रूप है। ''10वीं शताब्दी के अन्त में कच्छवाहों ने मीणा सरदारों को'' को 'जयपुर' से निकाल बाहर किया। मीणा कम या अधिक मेरवाड़ा की अधिकतर जातियों से सम्बद्ध रहे हैं। जैसे मेवाड़ के उत्तर–पूर्व तथा अजमेर में मीणा कानून मानने वाले, दबंग लोग रहे हैं, और अपनी जिंदगी लूट और खेती करके गुजारते हैं। इस संदर्भ में ये राजपूताना के भीलों से मिलते हैं। दूसरी ओर करौली के मीणा तुलनात्मक रूप से सभ्य और सही ढंग से जीने वाले लोग हैं। पिछले 400 वर्षों से मीणा करौली राज्य में सरदार और प्रमुख कृषक रहे हैं।'' वर्तमान में भौगोलिक दृष्टि से इस क्षेत्र में राजस्थान के भरतपुर, जयपुर, दौसा, अलवर व सवाई माधोपुर व करोली जिले आते हैं और ये ही मीणा बाहुल्य जिले हैं। ये अजमेर जिले में भी हैं परन्तु वहॉ मीणाओं को अनुसूचित जनजाति में शामिल नहीं किया गया है। ''मीणा जनजाति एक शक्तिशाली जनजाति थी और राजपूतों के उद्‌भव से पूर्व राजस्थान के एक बड़े भाग में मीणा सरदारों का ही शासन था।'' एम. ए. शैरिंग लिखते हैं, ''सम्भवतः मीणा मारवार के शुरू के बसने वालों में से हैं। जयपुर में वे राजदरबार के प्रमुख विश्वसनीय पदों पर काम करते थे।'' जब उनका शासन धीरे–धीरे खत्म हुआ तो उन्होंने नये योद्धा राजपूतों के प्रति अपनी पूर्ण वफादारी दिखाई और बदले में भूमि अथवा जागीर प्राप्त की। किन्तु कुछ ऐसे भी मीणा समूह थे जो नए शासकों से समझौता नहीं कर सके और उन्होंने अपने दल बनाकर विरोध, अपराध और हिंसा का रास्ता अपनाया। ये जंगलों में रहने लगे थे और फिर इन्हें पुनः बसाने का क्रम चालू किया गया। इन्हें प्रारम्भ में 'चौकीदार' जैसे पद दिए गए। इस तरह इनके दो भाग हो गए :– 1 जमींदार मीणा 2 चौकीदार मीणा।'' ये दोनों भाग अभी तक हैं। यह हिन्दू धर्म को मानने वाले हैं। एम. ए. शैरिंगे लिखते हैं, ''भरतपुर के मीणा मांस खाते हैं, शराब पीते हैं और अंधविश्वासी हैं। वे दो तरह के पेशे करते हैं या तो कृषक हैं या गांव के चौकीदार हैं।'' राजस्थान के आदिवासियों में सर्वाधिक जनसंख्या मीणाओं की है।

शोध समस्या में प्रयुक्त अवधारणात्मक शब्दों की विवेचना

शोध अध्ययन में प्रयुक्त अवधारणात्मक शब्दों की अपना महत्व होता है। शोध अध्ययन के शीर्षक में उपयोग किए गए अवधारणात्मक शब्द सम्पूर्ण शोध अध्ययन की रूपरेखा को स्पष्ट करते हैं। इसलिए इन महत्वपूर्ण शब्दों को संक्षिप्त रूप में व्याख्यायित करना आवश्यक हो जाता है। शोध अध्ययन के शीर्षक में प्रयुक्त अवधारणात्मक समप्रत्ययों की संक्षेप में व्याख्या निम्न प्रकार है :–

मीणा जनजाति

प्रस्तुत शोध अध्ययन में 'मीणा जनजाति' शब्द से आशय भारतीय संविधान के अनुच्छेद 342, खंड 1 के अंतर्गत 'मीणा जनजाति' राष्ट्रपति द्वारा घोषित सार्वजनिक सूचना द्वारा जनजातियों, जनजाति समुदायों या जनजाति समूहों के अंतर्गत घोषित जनजातियों , जनजाति समुदाय या जनजातियों के भीतरी समूह में परिगणित जनजाति से है। 'मीणा जनजाति' राजस्थान की प्रमुख आदिम जनजातियों में से एक है। 'मीणा जनजाति' मुख्य रूप से राजस्थान सहित मध्यप्रदेश, हरियाणा, उत्तरप्रदेश आदि राज्यों में कम आबादी वाला जनजातीय समुदाय हैं। 'मीणा जनजाति' की उपजातियों चौकीदार, जमीदार, नयाबासी, उज्जला आदि प्रमुख है। शोध अध्ययन में शामिल राजस्थान के जनजातीय क्षेत्र विकास विभाग द्वारा निर्धारित परावर्तित क्षेत्र विकास उपागमन (माडा) क्षेत्र में शामिल जयपुर जिले की मीणा जनबाहुल्य वाली माडा क्षेत्र की बस्सी एवं जमुवारामगढ़ तहसीलों मीणा लोग निवास करते हैं। मीणा जनजाति भारतीय जनजातीय समूहों का प्रमुख हिस्सा है। मीणा जनजाति की अपनी अद्वितीय सांस्कृतिक परंपरा है। मीणा मुख्यतः ढूढाडी, मेवाती, हाड़ोती, मारवाड़ी, शेखावाटी, हिन्दी, राजस्थानी बोली–भाषा बोलते हैं। मीणा जनजाति वर्तमान में विकास के मार्ग पर अग्रसर हो रही है।

जन माध्यम

शोध अध्ययन में 'जन माध्यम' शब्द से तात्पर्य संचार के विभिन्न माध्यमों से होकर केवल 'टेलीविजन' से है। संचार या सम्प्रेषण के लिए विभिन्न जन माध्यमों का प्रयोग किया जाता हैं जिनमें रेडियो, समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, सिनेमा, न्यू मीडिया, किताबें, एवं टेलीविजन। सामान्य तौर से जनसंचार का प्रयोग टीवी, रेडियो, समाचार–पत्र, पत्रिका, फिल्म या संगीत रिकार्ड इत्यादि के माध्यम से सूचना, संदेश, कला व मनोरंजन से संबंधित विषयवस्तु के प्रसारण एवं वितरण को प्रस्तुत करने के लिए किया जाता है। सामान्य तौर से समाचार–पत्र, पत्रिका, पुस्तक, रेडियो, टीवी, फिल्म, संगीत रिकार्ड इत्यादि को जनमाध्यम की श्रेणी में शामिल किया जाता है वर्तमान में जनमाध्यमों की पहुँच का क्षेत्र बढ़ा है। वर्तमान में टेलीविजन से प्रसारित कार्यक्रम देश के प्रत्येक हिस्से में देखे–सुने जा सकते हैं। मीणा जनबाहुल्य क्षेत्रों में टेलीविजन एवं अन्य जनमाध्यमों की पहुँच तेजी से बढ़ने के कारण ही मीणा जनजाति वर्तमान समय में सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनैतिक आदि परिवर्तनों के संक्रमण काल से गुजर रही है। जनजातीय समुदाय केन्द्र–राज्य सरकारों द्वारा संचालित विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं के क्रियान्वयन, समुदाय में स्थापित होती शिक्षा की महत्ता, बढ़ती जन जागरूकता एवं जनमाध्यमों के द्वारा नवाचारों को ग्रहण कर स्वयं में बदलाव ला रहे हैं। हालॉकि इन सबके चलते मीणा समुदाय की परंपरागत संचार परंपराएँ न्यूनाधिक रूप से प्रभावित भी हुई है। आदिमता से परिपूर्ण परंपराओं का लोप स्वाभाविक था। परंतु मीणा समुदाय की परंपरागत सामाजिक–सांस्कृतिक व्यवस्था में टेलीविजन जन माध्यम के प्रवेश एवं उसकी आभा तथा प्रभाव मीणा समुदाय की संस्कृति में परिवर्तन के लिए कुछ हद तक जिम्मेंदार हैं। इस शोध अध्ययन में केवल 'टेलीविजन' को ही जन माध्यम माना गया है। क्योंकि शोध क्षेत्र में 'टेलीविजन' की उपलब्धता एवं पहुँच ज्यादा है। इसलिए टेलीविजन को ही शोध अध्ययन के लिए जनमाध्यम के रूप में शामिल किया गया है।

टेलीविजन दृश्य–श्रव्य जन माध्यम होने के कारण मीणा जनजाति पर भी प्रभाव डालता है। उसके सामाजिक, सांस्कृतिक एवं पारंपरिक स्वरूप में परिवर्तन करने में प्रभावशाली होने के साथ ही आसानी से लोगों को दृश्यों के माध्यम से प्रस्तुत की जाने वाली विषय वस्तु को समझा जा सकता है। अतः शोध अध्ययन में प्रयुक्त 'जनमाध्यम' से आशय केवल ओर केवल 'टेलीविजन' से है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में टेलीविजन का मीणा जनजाति के सामाजिक–सांस्कृतिक स्वरूप पर पड़ने वाले प्रभावों एवं उसकी भूमिका का आकलन एवं विश्लेषण किया गया है।

सामाजिक–सांस्कृतिक परिवर्तन

शोध अध्ययन में 'सामाजिक–सांस्कृतिक परिवर्तन' से आशय मीणा जनजाति में व्याप्त 'परंपरागत सामाजिक–सांस्कृतिक स्वरूप' से है। मीणा जनजाति में विभिन्न परंपरागत सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं अन्य मान्यताएँ प्रचलित रही हैं। एक प्रकार से देखा जाये तो मीणा जनजाति की सम्पूर्ण जीवन प्रक्रिया ही इस परंपरागत सामाजिक–सांस्कृतिक व्यवस्था के माध्यम से संचालित होती रही है। मीणा समुदाय का कोई क्रियाकलाप होगा, जिसमें इनकी संस्कृति के तत्व शामिल न हो। मीणा समुदाय परंपराओं, रूढ़ियों और मान्यताओं को बड़ी निष्ठा से मानते हैं। शोध अध्ययन में सामाजिक–सांस्कृति परिवर्तन से आशय मीणा जनजाति की जीवन शैली के कुछ प्रमुख पक्षों को रखा गया है, जिनमें मुख्य रूप से उनके परंपरागत जन्म संस्कार, विवाह संस्कार, मृत्यु संस्कार एवं पर्व–त्यौहार पर प्रचलित परंपराओं को शामिल किया गया है। इन परंपराओं में उनके लोकगीत, लोकनृत्य, गोदना, लोककथा, सामूहिकता की भावना, धार्मिक विश्वास, लोक मान्यताएँ, वस्त्राभूषण सामूहिक आयोजन, समुदाय की परंपरागत पंचायत व्यवस्था आदि में आये परिवर्तन को शामिल किया गया है।

प्रभाव

मीणा जनजाति की परंपरागत संस्कृति उन्हीं के समान अत्यंत ही सरल एवं सहज है। मीणा जनजाति से संबंधित साहित्य के अवलोकन से कई ऐसे तथ्यों की जानकारी होती हैं जो इस जनजातीय समुदाय की सामाजिक–सांस्कृतिक व्यवस्था सहित इनकी वाचिक परंपराओं एवं संस्कृति पर टेलीविजन जनमाध्यम के प्रभावों को स्पष्ट करती हैं। उक्त शोध अध्ययन में 'प्रभाव' से तात्पर्य टेलीविजन जनमाध्यम से प्रसारित विषयवस्तु के तात्कालिक अथवा दीर्घकालिक कारणों से श्रोताओं एवं दर्शकों की सूचनात्मक समृद्धि, जागरूकता में वृद्धि एवं अंतिम रूप से व्यवहार परिवर्तन से है। उक्त शोध अध्ययन में 'प्रभाव' की विवेचना इस आधार पर की गई है : मीणा जनजाति के सामाजिक–सांस्कृतिक व्यवस्था में परिवर्तन संबंधी विभिन्न मान्यताओं, परंपराओं एवं अन्य विभिन्न विधाओं पर टेलीविजन के कारण आए न्यूनाधिक परिवर्तन का विश्लेषण किया गया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में टेलीविजन के 'प्रभाव' को विकास के प्रमुख आयामों के संदर्भ में सूचना एवं जागरूकता संवर्धन, संस्कृति संचार एवं परंपरा के संदर्भों के रूप में भी देखने का प्रयास किया गया है।

भूमिका

मीणा जनजाति की सामाजिक–सांस्कृतिक व्यवस्था उनके समान ही सरल एवं सहज होने के साथ ही बहुत प्राचीन भी रही हैं। मीणा जनजाति से संबंधित साहित्य के अवलोकन से कई ऐसे तथ्य प्राप्त होते हैं जो इस जनजाति के सामाजिक–सांस्कृतिक परंपराओं सहित उनकी वाचिक परंपराओं में टेलीविजन की भूमिका को स्पष्ट करते हैं। प्रस्तुत शोध अध्ययन में 'भूमिका' से आशय टेलीविजन द्वारा प्रसारित विषयवस्तु की तात्कालिक या दीर्धकालिक कारणों से श्रोताओं व दर्शकों की सूचनात्मक समृद्धि, जागरूकता अभिवर्धन एवं अंततोगत्वा व्यवहार में परिवर्तन से है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में 'भूमिका' को इस आधार पर विवेचित किया गया है : मीणा जनजाति की सामाजिक–सांस्कृतिक व्यवस्था एवं उनकी मान्यताओं की विभिन्न विधाओं में टेलीविजन की भूमिका के कारण आए न्यूनाधिक परिवर्तन का विश्लेषण किया गया है। इस प्रकार प्रस्तुत शोध अध्ययन में टेलीविजन की 'भूमिका' को विकास के प्रमुख आयामों के संदर्भ में सूचना एवं जागरूकता संवर्धन, संस्कृति संचार एवं परंपरा के संदर्भों के रूप में भी देखने का प्रयास किया गया है।

शोध प्रविधि एवं क्षेत्र परिचय

शोध प्रविधि के अंतर्गत मीण जानजाति में जनमाध्यमों की उपलब्धता, उपयोग प्रवृति, बारंबारता एवं व्यतीत किए जाने वाले समय एवं मीणा जनजाति के सामाजिक–सांस्कृतिक परिवर्तन में जनमाध्यमों (टेलीविजन) की भूमिका, प्रभावों का संग्रह, विश्लेषण एवं व्याख्या करने के लिए अपनाई गई विधियों एवं उपकरणों आदि के बारे में बताया गया है। इस शोध अध्ययन में टेलीविजन की भूमिका के अंतर्गत उनमें सामाजिक, सांस्कृतिक जागरूकता, शिक्षा, स्वास्थ्य, राजनैतिक चेतना आदि विभिन्न प्रकार के पक्षों को शामिल किया गया है। वहीं टेलीविजन के प्रभावों के अंतर्गत मीणा समुदाय के जन्म संस्कार, विवाह संस्कार, मृत्यु संस्कार पर की जाने वाली परंपराओं एवं रस्मों के साथ ही उनकी जवीन शैली और उनके पर्व–त्यौहारों पर की जाने वाले परंपराओं एवं मान्यताओं आदि पक्षों को शामिल किया हैं।

प्रस्तुत अध्याय के इस खण्ड में शोध अध्ययन के दौरान इस्तेमाल में लाई गई शोध प्रविधि एवं आंकड़ों के संकलन के अंतर्गत संकलन की प्रविधि, स्रोत, प्रतिदर्श, प्रतिदर्श का आकार, प्रतिदर्श के चयन की प्रविधि, शोध उपकरण, शोध अभिकल्प आदि के बारे में संक्षिप्त विवरण दिया गया है। शोध अध्ययन के लिए स्वतंत्र चर के रूप में टेलीविजन कार्यक्रमों की विषयवस्तु (विशेषतः समाचार, धारावाहिक, सांस्कृतिक, कृषि, फिल्म, स्वास्थ्यप्रद, संगीत, नृत्य, शैक्षणिक, खेल, मनोरंजनपरक, हास्यप्रद आदि जैसे विभिन्न टेलीविजन कार्यक्रमों की विषय–वस्तु), वहीं आश्रित चरों में सामाजिक–सांस्कृतिक परिवर्तन, जीवन शैली, पारम्परिक रीति–रिवाज, शिशु जन्म संस्कार, विवाह संस्कार, मृत्यु संस्कार , परम्परागत त्यौहार एवं उत्सव आदि का चुनाव किया गया है। शोध अध्ययन में शोध के उद्देश्यों के आधार पर तैयार साक्षात्कार

अनुसूची, गैर–सहभागी अवलोकन, अनौपचारिक वार्तालाप के द्वारा प्राप्त आंकड़ों का रेखाचित्र, ग्राफ एवं सारणीयन करके सांख्यिकीय विधियों के आधार पर आंकड़ों को विश्लेषित किया गया है।

विषय के चुनाव का कारण :

राजस्थान राज्य में आदिवासी बहुतायत में निवास करते हैं। कुल जनसंख्या की 13.5 प्रतिशत जनसंख्या आदिवासियों की है। आदिवासी समाज की अपनी समृद्ध परंपराएं हैं। उनका रहन–सहन, खान–पान आज भी मुख्य समाज से भिन्न है। किन्तु वर्तमान में सामाजिक–सांस्कृतिक परिवर्तन करने में जनमाध्यमों (टेलीविजन) की अहम भूमिका होती है। आदिवासी समाज के संदर्भ में देखा जाए तो एक तरफ जहां आदिवासी समाज की अपनी समृद्ध परंपराएं हैं वहीं आदिवासी समाज में अशिक्षा, असमानता, अंधविश्वास, बेरोजगारी जैसी तमाम विसंगतियां भी है।

जब सामाजिक–सांस्कृतिक परिवर्तन की बात आती है तो जनमाध्यमों (टेलीविजन) से विशेष रूप से आशाएं की जाती हैं कि उनके द्वारा आदिवासी समाज के सामाजिक–सांस्कृतिक पक्षों पर अच्छा प्रभाव पड़े। इस शोध में राजस्थान के मीणा आदिवासी समुदाय में सामाजिक–सांस्कृतिक परिवर्तन में जनमाध्यमों का प्रभाव एवं भूमिका का परीक्षण करने का प्रयास किया गया है।

अध्ययन का महत्व :–

बदलते सामाजिक परिदृश्य के बावजूद, आदिवासी शब्द के प्रयोग मात्र से ही लोगों की कल्पनाओं में किसी जंगली, बर्बर, असभ्य, जंगलों एवं पहाड़ी इलाकों में निवास करने वाले, कंदमूल एवं जंगली जानवर खाकर जीवन–यापन करने वाले लोगों की तस्वीर उभरती है। युग बीतते गये, कुछ आदिवासी लोग बड़े–बड़े राजनीतिक, सामाजिक पदों पर आसीन हुये लेकिन ज्यादातर आदिवासियों के लिए आज का आधुनिक युग भी आदिम युग से ज्यादा बेहतर नहीं है। उनका संपूर्ण जीवन जंगलों में जानवरों की तरह इधर–उधर शिकार एवं खेती करके समाप्त हो जाता है। उन्हें आज भी जंगलों में ही अपना पूरा जीवन बिताना पड़ता है। लेकिन इन आदिवासी समूहों में से कुछ आदिवासी समूह आधुनिक युग के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने का प्रयास आज भी जारी रखे हुए है, उन्हीं समूहों में से एक मीणा जनजातिय समुदाय है जो कि कुछ हद तक आधुनिक समाज में सभ्य समझे जाने वालों के समान्तर अपने विकास की ओर कदम बढ़ा चुका है। आज के समय में मीणा समुदाय के लोगों द्वारा प्रत्येक क्षेत्र में अपनी मौजूदगी दर्ज की जाने लगी है, चाहे वह शिक्षा का क्षेत्र हो, चाहे नौकरी के क्षेत्र में हो, चाहे मीडिया हो, या फिर सामाजिक–सांस्कृतिक कार्यक्रम हो, या फिर राजनीतिक क्षेत्र हो, आज प्रत्येक क्षेत्र में मीणा समुदाय द्वारा कहीं न कहीं न्यूनाधिक मात्रा में अपनी भागीदारी दर्ज की जा रही है। जिसके चलते इस जनजाति के सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं आर्थिक जीवन में परिवर्तन परिलक्षित होते दिख रहे हैं। इन सभी परिवर्तनों के होने में जन माध्यमों (टेलीविजन) की भी कहीं न कहीं भूमिका मालूम होती है

तथा इस जनजाति के जीवन–यापन के तौर तरीकों में परिवर्तन होने में जन माध्यमों (टेलीविजन) का प्रभाव भी कुछ स्तर तक मालूम होता है।

ऐसे में यह जानना महत्वपूर्ण है कि चौथे स्तंभ के रूप में पहचाने जाने वाला मीडिया खासकर टेलीविजन मीणा आदिवासी समाज पर किस प्रकार अपना प्रभाव डालता है। साथ ही साथ यह भी जानना कि ये जन माध्यम मीणा आदिवासी संस्कृति को किस प्रकार लेता है और इनकी सांस्कृतिक विरासत को नष्ट होने से बचाने में किस प्रकार की भूमिका का निर्वहन कर रहा है? क्या मीणा समाज के उत्थान एवं विकास में जन माध्यम हमेशा सकारात्मक भूमिका ही निभाता है? साथ ही जन माध्यमों का इस जनजाति पर प्रभाव कैसा पड़ रहा है? इस जनजाति के सामाजिक, शैक्षणिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक स्तर में सुधार के लिये जन माध्यमों द्वारा बेहतर कदम किस प्रकार उठाये जा सकते है?

अध्ययन का महत्व इस बात से भी लगाया जा सकता है कि सरकार की तरफ से जनजातीय समुदाय के लिए बनाई गई नीतियों के क्रियान्वयन में यह एक रोडमैप साबित हो सकता है।

आए दिन आयोजित संगोष्ठियों और समाचार पत्रों में पढ़ते–सुनते आए हैं कि सरकारी नीतियों में कमी नहीं है, बस कमी है तो उसके क्रियान्वयन में। आखिर यह चूक सरकार की तरफ से है या फिर लक्ष्यित समाज की तरफ से है? पंडित दीनदयाल अंत्योदय के स्वप्नदृष्टा कहलाए जाते हैं। अंत्योदय तो तभी संभव है जब समाज के अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति की आवाज सरकार की आवाज हो और सरकारी नीतियों में उसकी आवाज झलकती हो। यह बात समाज और सरकार के बीच हुए संचार पर निर्भर करती है। संचार यानी जन संचार माध्यम विशेषतः टेलीविजन।

हालिया अध्ययन बताते हैं कि सरकारी नीतियों के क्रियान्वयन सफल न होने के कारण, नीतियों का प्रचार–प्रसार न होना है। नीतियों का लाभ लक्ष्यित समाज तक न पहुचकर बल्कि कहीं बीच में ही गुम हो जाना है। यही नहीं, नीतियों के लाभ के वाजिब हकदार का सही चुनाव न कर पाना भी है। ऐसे में प्रस्तावित शोध समाज और सरकार के बीच बनी उन सभी दूरियों को मापने और समझने का प्रयास करेगा। साथ ही आदिवासी समाज के दैनिक जीवन में बदलाव लाने वाले जन माध्यमों की भूमिका एवं प्रभाव का विश्लेषण करेगा।

शोध के उद्देश्य :–

प्रत्येक शोध अध्ययन का कोई न कोई उद्देश्य होता है जिसके माध्यम से वह संचालित होता है। उद्देश्य के बिना शोध की सीमाओं का अनुमान लगाना संभव नहीं होता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन राजस्थान की मीणा जनजाति के सामाजिक–सांस्कृतिक पक्षों पर जनमाध्यमों के प्रभाव एवं भूमिका पर केन्द्रित है।

शोध उद्देश्य की प्राप्ति के लिए शोद्यार्थी द्वारा निम्नलिखित बिन्दुओं को आधार बनाकर शोध कार्य किया गया है, जो कि इस प्रकार हैं–

1. मीणा जनजातीय समुदाय में टेलीविजन के अलावा अन्य जन माध्यमों की स्थिति एवं पहुॅच का अध्ययन करना।
2. मीणा जनजातीय समुदाय के लोगों द्वारा जनमाध्यमों (टेलीविजन) को देखने के व्यावहारिक स्वरूप का पता करना।
3. मीणा जनजाति के सामाजिक–सांस्कृतिक परिवर्तन में जन माध्यमों (टेलीविजन) की भूमिका का अध्ययन करना।
4. मीणा जनजाति के सामाजिक–सांस्कृतिक परिवर्तन में (जन्म, विवाह, मृत्यु, त्यौहार एवं मेलों संबंधी परम्परागत रीति–रिवाजों के संबंध में) जन माध्यमों (टेलीविजन) के प्रभाव का अध्ययन करना।

उपकल्पना :

प्रस्तुत अध्ययन के लिए उपकल्पनाओं का निर्माण भी किया गया है। उपकल्पनाओं के निष्कर्ष से मेल होने के बाद ही सिद्धान्त निर्मित होते हैं। इस प्रकार उपकल्पनाएॅ शोधकर्ता को मार्ग में इधर–उधर भटकने से बचाते हुए सही दिशा में आगे बढ़ाती रहती है। प्रस्तुत अध्ययन में साहित्य अवलोकन के उपरान्त निम्न उपकल्पनाएॅ निर्मित की गई हैं–

1. मीणा जनजातीय समुदाय में टेलीविजन के अलावा अन्य जन माध्यमों की कोई पहुॅच नहीं है।
2. मीणा जनजाति के सामाजिक–सांस्कृतिक परिवर्तन में जन माध्यमों (टेलीविजन) की कोई महत्वपूर्ण भूमिका नहीं है।
3. मीणा जनजाति के सामाजिक–सांस्कृतिक परिवर्तन में (जन्म, विवाह, मृत्यु, त्यौहार एवं मेलों संबंधी परम्परागत रीति–रिवाजों के संबंध में) जन माध्यमों (टेलीविजन) का कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं है।
4. टेलीविजन देखने के कारण परिवार के सदस्यों, दोस्तों, पड़ोसियों एवं समाज के साथ बातचीत एवं आपसी मेल–जोल पर महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं पड़ता है।

अध्ययन के चर :–

शोध अध्ययन में चरों का महत्वपूर्ण स्थान होता है। चरों के बिना शोध की कल्पना भी नहीं कर सकते है। चरों के द्वारा शोध का मार्ग तैयार होता है एवं अन्तिम रूप से निष्कर्ष तक पहुंचता है। इस शोध अध्ययन में शोध उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए साहित्य के पुनरावलोकन के आधार पर वर्तमान अध्ययन के लिए निम्नलिखित चरों का चयन किया गया है।

(1) **आश्रित चर :** इसके अंतर्गत सामाजिक–सांस्कृतिक परिवर्तन, जीवन शैली, पारम्परिक रीति रिवाज, शिशु जन्म संस्कार, विवाह संस्कार, मृत्यु संस्कार, परम्परागत त्यौहार एवं उत्सव आदि को आश्रित चरों के रूप में शामिल किया गया हैं।

(2) **स्वतंत्र चर :** इसके अंतर्गत टेलीविजन की विषय–वस्तु (विशेषतः समाचार, धारावाहिक, सांस्कृतिक, कृषि, फिल्म, स्वास्थ्यप्रद, संगीत, नृत्य, शैक्षणिक, खेल, मनोरंजनपरक, हास्यप्रद आदि जैसे विभिन्न टेलीविजन कार्यक्रमों की विषय–वस्तु) को स्वतंत्र चर के रूप में शामिल किया गया है।

शोध अभिकल्प :–

उक्त शोध विषय ''सामाजिक–सांस्कृतिक परिवर्तन में जन माध्यमों की भूमिका एवं उनका प्रभाव : एक अध्ययन'' (राजस्थान की मीणा जनजाति के विशेष संदर्भ में) को मूर्त रूप प्रदान करने के लिए उक्त अध्ययन राजस्थान की मीणा जनजाति के विशष संदर्भ में किया गया है।

क्षेत्र एवं उत्तरदाताओं का चयन :

राजस्थान का आधे से ज्यादा भाग आदिवासी समुदाय के निवास के रूप में जाना जाता है। राजस्थान के इस भाग में आदिवासी क्षेत्र राजस्थान सरकार के वर्गानुसार पॉच विकास क्षेत्रों में विभाजित किया गया हैं, जो इस प्रकार है : 1 अनुसूचित क्षेत्र, 2 माडा क्षेत्र, 3 माडा कलस्टर क्षेत्र, 4 सहरिया क्षेत्र एवं 5 बिखरी हुई जनजाति क्षेत्र। इन क्षेत्रों के अन्तर्गत दक्षिणी राजस्थान के उदयपुर, डूंगरपुर, बॉसवाड़ा, एवं प्रतापगढ़ जिले(चितौड़गढ़ जिले की प्रतापगढ़ एवं अरनोद पंचायत समिति) आदि क्षेत्र उपयोजना क्षेत्र एवं उत्तरी राजस्थान में जयपुर, अलवर, सवाईमाधोपुर, दौसा, करौली आदि जिलें मांडा योजना के अंतर्गत आते हैं। इन माडा क्षेत्रों में तीन संभाग जयपुर, उदयपुर एवं कोटा भी शामिल हैं। इन माडा क्षेत्रों में शामिल तीन संभागों में से जयपुर संभाग का चयन संभावना निदर्शन शोध विधि के द्वारा लॉटरी विधि के माध्यम से किया गया है। क्षेत्र अध्ययन के दौरान समस्त क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करने वाले तत्वों का सर्वेक्षण करके संकलन किया गया है।

अध्ययन हेतु प्रथम चरण में राजस्थान के माडा क्षेत्र के अंतर्गत तीन संभाग मुख्यालय भी शामिल है। जिनमें से एक संभाग जयपुर भी है जो कि राजस्थान राजय की राजधानी एवं राज्य के सबसे बड़े शहर भी है, का चयन इन तीन संभागों में से लॉटरी विधि के माध्यम से किया गया। राजस्थान के प्रमुख शहर जयपुर की नगरीय जनसंख्या 23.23 प्रतिशत है इस प्रकार जयपुर राज्य का सबसे शहरीकरण वाला जिला है, जोकि दूरस्थ आदिवासी क्षेत्रों के साथ–साथ संभागीय मुख्यालय भी है। यहॉ पर परम्परागत रीति–रिवाजों के साथ–साथ आवागमन के साधनों की भी प्रचुरता है, इसलिये इस क्षेत्र में हो रहे परिवर्तनों का अध्ययन करना आवश्यक हो जाता है।

द्वितीय चरण में जयपुर जिले की 13 तहसीलों में से कुल 5 तहसीलें मांडा योजना क्षेत्र में शामिल है। इन 5 तहसीलों में से दो तहसीलों बस्सी एवं जमुवारामगढ़ का चयन संभावना निदर्शन पद्धति के अंतर्गत लॉटरी विधि के द्वारा किया गया है, उसके पश्चात् प्रत्येक तहसील में से बीस–बीस आदिवासी बाहुल्य गांवों का चयन किया गया है। इन गॉवों के चयन का आधार 2011 की जनगणना के अनुसार जिन गॉवों में कुल जनसंख्या में से 80 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या मीणा जनजाति के लोगों की है को शामिल किया गया है। इनमें से बस्सी तहसील में 80 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या वाले कुल 104 गांवों से 20 गांवों का चयन सरल यादृच्छिक निदर्शन विधि के माध्यम से किया गया, क्योंकि इस विधि के माध्यम से प्रत्येक गॉव के चुनें की समान संभावना होती हैं। इसी प्रकार जमुवारामगढ़ तहसील में 80 प्रतिशत से अधिक मीणा आदिवासी जनसंख्या वाले कुल 92 गांवों में से 20 गांवों का चयन सरल यादृच्छिक निदर्शन विधि के द्वारा किया गया है। इन चयनित गांवों में से शोधार्थी ने उन उत्तरदाताओं का चयन किया है जिनके घरों में टेलीविजन देखने की सुविधा उपलब्ध पाई गई है। इसके साथ ही प्रत्येक गांव की कुल मीणा जनसंख्या में से आनुपातिक आधार पर लगभग 1.5 प्रतिशत लोगों को ही उत्तरदाता के रूप में चुना गया है। इन उत्तरदाताओं के चयन का आधार गैर–संभावना निदर्शन प्रविधि के अंतर्गत उद्देश्यात्मक विधि के माध्यम से किया गया है अर्थात् जिन उत्तरदाताओं के घर में टेलीविजन की सुविधा पाई गई है, एवं टेलीविजन देखते है, का ही चयन किया गया है। साथ ही टेलीविजन की सुविधा वाले उत्तरदाताओं के परिवार की आर्थिक स्थिति कहीं न कहीं उन लोगों की तुलना में न्यूनाधिक रूप से अच्छी है जिनके परिवारों में टेलीविजन की सुविधा नहीं पाई गई है।

इस प्रकार दोनों तहसीलों से 400–400 उत्तरदाताओं का चयन किया गया है। अर्थात् कुल 800 उत्तरदाताओं का चयन किया गया है परंतु साक्षात्कार अनुसूची पर केवल 646 उत्तरदाताओं ने ही अपनी प्रतिकिया प्रदान की है। इस प्रकार 646 उत्तरदाताओं का प्रतिशत सभी चयनित गांवों में मीणा जनजाति की कुल जनसंख्या 40403 का लगभग 1.5 प्रतिशत औसत रहा है, इस प्रकार बस्सी तहसील में कुल 400 चयनित उत्तरदाताओं में से केवल 320 उत्तरदाताओं ने साक्षात्कार अनुसूची में पूछे गये प्रश्नों पर अपनी प्रतिकिया प्रदान की एवं जमुवारामगढ़ तहसील में भी कुल 400 चयनित उत्तरदाताओं में से केवल 326 उत्तरदाताओं ने साक्षात्कार अनुसूची में पूछे गये प्रश्नों पर अपनी प्रतिकिया प्रदान की है। इस प्रकार कुल 646 उत्तरदाताओं पर ही यह शोध अध्ययन किया गया हैं।

शोध प्रक्षेत्र एवं सांख्यिकीय विधियों का उपयोग

इस प्रकार यह शोध अध्ययन सर्वेक्षण शोध एवं विवरणात्मक होने के साथ ही क्रास सेक्शनल अध्ययन एवं मिश्रित शोध प्रविधियों पर आधारित हैं। अतः शोध के लिए शोध प्रक्षेत्र तकनीको एवं सांख्यिकीय विधियों का उपयोग किया गया है। जिसके अंतर्गत संभावना निदर्शन प्रविधि में सरल यादृच्छिक निदर्शन विधि, गैर–संभावना निदर्शन प्रविधि में उद्देश्यपूर्ण (सोद्देश्य) निदर्शन पद्धति का उपयोग करते हुए जयुपर

जिले की दो तहसीलों बस्सी एवं जमुवारामगढ़ के कुल 40 गांवों के मीणा समुदाय के 646 लोगों से बंद प्रकृति की साक्षात्कार–अनुसूची के माध्यम से आंकड़ों का संकलन किया गया हैं। अतः क्षेत्र कार्य अध्ययन के लिए सैंपल सर्वे को आधार बनाकर दो तहसीलों का चयन किया गया है जिससे बेहतर परिणाम प्राप्त हो सकें। शोध प्रविधि में मुख्य रूप से एथनोग्राफिकल प्रविधि (साक्षात्कार–अनुसूची, गैर–सहभागी अवलोकन, अनौपचारिक वार्तालाप, कैमरा रिकॉर्डिंगस, डायरी में दर्ज तथ्य आदि के माध्यम) से मीणा जनजातीय समुदाय की सामाजिक–सांस्कृतिक व्यवस्था पर जनमाध्यमों (टेलीविजन) के प्रभाव एवं भूमिका को जानने का प्रयास किया गया है। शोधकर्ता द्वारा अपने शोध विषय से संबंधित तथ्यों व सूचनाओं को संकलित करने के लिए निम्नलिखित स्रोतों एवं प्रविधियों का प्रयोग किया गया है –

प्राथमिक स्रोत :– जन माध्यमों के द्वारा मीणा जनजातिय संस्कृति में किस प्रकार के परिवर्तन आये है तथा उन पर जन माध्यमों का प्रभाव किस रूप में पड़ा है आदि बातों से संबंधित आंकड़े संकलित करने के लिए व्यक्तिगत साक्षात्कार अनुसूची उपकरण के माध्यम से गांव के चयनित उत्तरदाताओं से साक्षात्कार कर एवं शोध क्षेत्र का गैर–सहभागी रूप से अवलोकन और अनौपचारिक वार्तालाप के माध्यम से आंकड़ों का संकलन किया गया है। समंकों के संकलन के हेतु साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया है।

इस प्रकार अनुसंधान कार्य के लिए जनजाति के लोगों से साक्षात्कार लिया गया तथा उनके द्वारा बताये गये तथ्यों को एकत्रित किया गया। अध्ययन से संबंधित प्राथमिक तथ्यों का गहनतापूर्वक अध्ययन करने के लिए गैर–सहभागी अवलोकन एवं अनौपचारिक वार्तालाप से अनेक महत्वपूर्ण तथ्य प्राप्त किये गये।

प्रस्तुत अध्ययन में विषय का गहन अध्ययन करने के लिए मिश्रित निदर्शन विधियों को प्रयोग में लाया गया है। ताकि समग्र का प्रतिनिधित्व हो सकें। ''एक निदर्शन जैसा कि नाम से स्पष्ट है किसी विशाल सम्पूर्ण का छोटा प्रतिनिधि है।'' निदर्शन प्रविधि के कई प्रकार है जिसमें से शोधार्थी ने जनजातीय जनसंख्या एवं स्वरूप को ध्यान में रखते हुए मिश्रित निदर्शन विधि का प्रयोग किया है। जिसमें बहुचरणीय निदर्शन तकनीक एवं उद्देश्यमूलक निदर्शन का प्रयोग कर उत्तरदाताओं का चुनाव किया गया।

प्राथमिक स्तर पर समंकों के संकलन हेतु वृहद सर्वेक्षण योजना बनायी गयी तत्पश्चात् गांवों में व्यक्तिगत रूप से अनेक बार उपस्थित होकर प्रत्येक उत्तरदाता से सम्पर्क स्थापित कर सूचनायें साक्षात्कार अनुसूची में संकलित की गयी साथ ही समय–समय पर गैर–सहभागी अवलोकन एवं अनौपचारिक वार्तालाप के माध्यम से अन्य सूचनायें एकत्रित की गई। इसके अतिरिक्त प्राप्त होने वाली जानकारी को अलग से डायरी में नोट किया गया।

द्वितीयक स्रोत :– ऐतिहासिक तथ्यों के लिए– अभिलेखीय रिकार्ड्स, लोक कथा, लोक गीत, मिथक एवं ऐतिहासिक सामग्री के विवेचन से मुख्य रूप से मीणा जनजाति की जीवन–शैली एवं संस्कृति पर जन माध्यमों के प्रभाव, प्रयोग, पहुॅच एवं भूमिका को शामिल कर समझने की कोशिश की गयी है। इसके

अतिरिक्त द्वितीय स्तर पर इस अध्ययन के विषय से संबंधित उपलब्ध प्रकाशित तथा अप्रकाशित, शासकीय अथवा अशासकीय माध्यमिक समंकों का भी उपयोग किया गया। जिनके स्रोतों में भारतीय जनगणना एवं रजिस्ट्रार जनरल भारत सरकार के विभिन्न प्रकाशनों, राजस्थान प्रदेश शासन आदिवासी कल्याण विभाग, सूचना विभाग के विभिन्न प्रकाशनों एवं दस्तावेजों एकीकृत आदिवासी विकास परियोजना जयपुर/बॉसवाड़ा/कोटा द्वारा समय–समय पर प्रकाशित वार्षिक प्रतिवेदनों पत्रिका श्यामला, संबंधित शोध अध्ययनों एवं विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित संबंधित समंकों एवं सूचनाओं का आवश्यकतानुसार उपयोग किया गया है। द्वितीयक ऑकड़ों के लिए समाचार–पत्र, पत्रिकायें, वेबसाइट्स, वार्षिक प्रतिवेदन, सरकारी विभाग से प्राप्त रिर्पोट्स आदि का उपयोग किया गया है। ऑकड़ों का संकलन दो चरणों में किया गया है। प्रथम चरण जनवरी 2019 से जुलाई 2019 तक एवं द्वितीय चरण मई 2021 से जुलाई 2021 तक की समयावधि में शोध क्षेत्र में समय–समय पर उपस्थित होकर किया गया है।

सर्वेक्षणः– इस पद्धति के माध्यम से चिन्हित क्षेत्र में लोगों से सैंपल सर्वे के माध्यम से शोध की वस्तुस्थिति के बारे में समझा गया। सर्वेक्षण से पूर्व पाइलेट अध्ययन किया गया। जिसमें 50 उत्तरदाताओं से साक्षात्कार अनुसूची को भरवाया गया। पाइलेट अध्ययन से ज्ञात कमियों को चिन्हित किया गया और उनके निवारण हेतु प्रयास किया गया। इसके उपरांत अंतिम साक्षात्कार अनुसूची का निर्माण किया गया। जिसके अंतर्गत कुल 800 उत्तरदाताओं का चयन किया गया है। जिनमें से 646 उत्तरदाताओं की प्रतिक्रिया शोध अध्ययन के अनुसार वैधता पर आधारित पाई गई है। इसलिए शोध अध्ययन 646 उत्तरदाताओं के संबंध में ही किया गया है। इन प्रकार प्रस्तुत शोध अध्ययन में इन उत्तरदाताओं का चुनाव उद्देश्यपूर्ण निदर्शन पद्धति एवं सरल यादृच्छिक निदर्शन पद्धतियों के साथ ही अनौपचारिक वार्तालाप आदि के माध्यम से साक्षात्कार अनुसूची के द्वारा आंकड़ों का संकलन सर्वेक्षण शोध के द्वारा किया गया है।

साक्षात्कार अनुसूचीः– प्रस्तुत अध्ययन में तथ्यों के संकलन हेतु साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया है क्योंकि साक्षात्कार अनुसूची एक ऐसा माध्यम है जिसमें विषय का गहन अध्ययन किया जाता है। अतः इस विधि का प्रयोग तथ्यों को विश्वसनीय और सम्पूर्ण संकलन के लिए किया गया है। इसके माध्यम से आदिवासी लोगों से शोध के विभिन्न परिप्रेक्ष्यों के बारे में जानने का प्रयत्न किया गया। इसके अलावा आवश्यकतानुसार समय–समय पर टेप–रिकार्डर, कैमरा द्वारा भी तथ्यों का संकलन किया गया है तथा तथ्यों के प्रस्तुतीकरण के लिए मानचित्र और छायाचित्र आदि का भी जगह–जगह प्रयोग किया गया है जिसके द्वारा शोध कार्य के उचित परिणाम एवं निष्कर्ष प्राप्त करने का प्रयास किया गया है।

मात्रात्मक विश्लेषण की पद्धति :

शोध अध्ययन में वर्णनात्मक सांख्यिकी पद्धति का प्रयोग करके आंकड़ों की प्रांरभिक समझ प्राप्त की गई है। आंकड़ों के पूर्वानुमानों को विश्लेषित करने के लिए माध्य माध्यिका, मानक विचलन एवं काई–स्कायर

परीक्षण, सहसंबंध पद्धतियों का उपयोग किया गया। स्वतंत्र चर और आश्रित चर के बीच संबंध का पता लगाने के लिए उन चरों को समझने के लिए काई–स्कायर परीक्षण का प्रयोग किया गया जिन्हें एक साथ समूहीकृत किया जा सकता है।

शोध की सीमाएं :–

राजस्थान के मीणा जनजाति से संबंधित संचार को समझने के लिए साहित्य, किताब एवं इंटरनेट पर इनसे संबंधित विषय वस्तु की कमी है, जो कि एक प्रमुख समस्या रही है। मीणा जनजाति के लोग राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों में ग्रामीण एवं दुर्गम इलाकों में रहते हैं, अतः उन तक पहुंचना व अध्ययन करना काफी चुनौतीपर्ण कार्य है, साथ ही लोगों के संकोच के कारण उनके बीच संवाद स्थापित करना भी एक जटिल कार्य है। इस शोध–कार्य की परिसीमा राजस्थान के चयनित जिले की मीणा जनजाति की संस्कृति, उनकी स्थिति, विकास एवं जन माध्यमों की भूमिका एवं प्रभाव आदि के बारे में अध्ययन तक सीमित की गई है।

शोध की सीमा, अर्थ, तकनीक, समय व साधन को ध्यान में रखते हुए संपूर्ण राजस्थान के सभी गांवों में मीणा जनजाति पर शोधकार्य करना संभव नहीं हो पाया, फलतः शोध कार्य में बहुचरणीय प्रतिदर्शन पद्धति एवं उद्देश्यात्मक निदर्शन पद्धति से राज्य के माडा क्षेत्र के अंतर्गत शामिल जयपुर जिलें को चुना गया, जहॉ मीणा आदिवासी समुदाय बाहुल्य रूप में निवास करता है। इस जिलें की माडा क्षेत्र के अंतर्गत आने वाली दो तहसीलों बस्सी एवं जमुवारामगढ़ के कुल 40 गांवों को शोध–क्षेत्र के अध्ययन के रूप में शामिल किया गया है। जो कि संपूर्ण माडा क्षेत्र की मीणा जनजाति का प्रतिनिधित्व करता है। इसके साथ ही सम्पूर्ण जनमाध्यमों को शोध अध्ययन में शामिल ना करके केवल ओर केवल टेलीविजन के प्रभाव एवं भूमिका को ही ज्ञात करने का प्रयास किया गया है। शोध में शामिल दोनों तहसीलें बस्सी व जमुवारामगढ़ माडा योजना के अंतर्गत आती है एवं चयनित 40 गांव भी माडा योजना के अंतर्गत ही शामिल है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन के द्वितीय अध्याय शोध क्षेत्र का परिचय के अंतर्गत शोध क्षेत्र का परिचय दिया गया है, जिसके अंतर्गत प्रमाणिक स्रोतों से क्षेत्र संबंधी जानकारी का समावेश किया गया है। इस अध्याय में जयपुर जिले की जनजातीय स्थिति, जनजातीय क्षेत्रीय विकास विभाग, जनजातीय विकास के कार्यक्षेत्रों – माडा क्लस्टर क्षेत्र, अनुसूचित क्षेत्र, माडा क्षेत्र, बिखरी जनजाति क्षेत्र, आदिम सहरिया क्षेत्र की चर्चा की गई हैं। अध्याय में माडा क्षेत्र के अंतर्गत शामिल जयपुर जिलें की बस्सी एवं जमुवारामगढ़ की मीणा जनजाति की जनसाख्यिकीय स्थिति का भी विवेचन किया गया है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन के तृतीय अध्याय साहित्य की समीक्षा में शोध विषय से संबंधित विभिन्न द्वितीयक स्रोतों से संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन किया गया है। जिससे प्रस्तुत शोध विषय के बारे में एक समझ का विकास हुआ है। इसके लिए विभिन्न सरकारी रिपोर्ट, पुस्तकों, शोध पत्रों, समाचार पत्रों,

पत्रिकाओं, एवं ऑनलाईन सामग्री की सहायता ली गई है। प्रस्तुत शोध अध्ययन के चतुर्थ अध्याय मीणा जनजाति का ऐतिहासिक विवरण के अंतर्गत मीणा जनजाति की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के अंतर्गत मीणा जनजाति की उत्पति एवं विकास, समूदाय के रीति रिवाज, आभूषण, वेशभूषा, घर, परिवार, विवाह, मृत्यु, उत्सव, त्यौहार, मेलों आदि के बारे में समझ विकसित करने के लिए परंपरागत स्वरूपों का वर्णन किया गया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन के पांचवें अध्याय जनमाध्यमों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के अंतर्गत विभिन्न जनसंचार माध्यमों, समाचार पत्र, पत्रिका, रेडियो, किताबें, पत्रिका, सिनेमा के साथ ही विशेषकर टेलीविजन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का विवेचन किया गया हैं।

प्रस्तुत शोध अध्ययन के छठवें अध्याय आंकड़ों का संकलन, तालिकाकरण एवं आरेखियकरण के अंतर्गत साक्षात्कार अनुसूची, गैर–सहभागी अवलोकन एवं अनौपचारिक वार्तालाप के द्वारा शोध सर्वेक्षण प्रक्षेत्र से संकलित किये गये तथ्यों, आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या तालिका एवं ग्राफ के माध्यम से की गई हैं। शोध सर्वेक्षण के दौरान अध्ययन में शामिल उत्तरदाताओं की सामाजिक, आर्थिक स्थिति, जनमाध्यमों की पहुंच एवं स्थिति, जनमाध्यमों का मीणा जनजातीय समुदाय की पारंपरिक सामाजिक–सांस्कृतिक व्यवस्था में परिवर्तन करने में भूमिका एवं प्रभाव से संबंधित आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या की गई है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन के अंतिम अध्याय शोध सांराश, निष्कर्ष, परिणाम एवं सुझाव के अंतर्गत आंकड़ों के विश्लेषण सें प्राप्त निष्कर्षों, परिणामों का विवेचन किया गया है। जिसके शोध उद्देश्यों एवं उपकल्पनाओं के परीक्षण से प्राप्त परिणामों का विवरण दिया गया है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन के अंतर्गत मीणा जनजातीय समुदाय में टेलीविजन के अलावा अन्य जन माध्यमों की स्थिति एवं पहुॅच का अध्ययन करने के लिए शोध प्रविधि के अंतर्गत साक्षात्कार अनुसूची, अनौपचारिक वार्तालाप एवं गैर–सहभागिता अवलोकन के माध्यम से मीणा जनजातीय माडा क्षेत्र में जनसंचार माध्यमों की पहुॅच एवं स्थिति का पता लगाने का प्रयास किया गया है। शोध से यह पता चला है कि मीणा जनजातीय समुदाय में टेलीविजन के अलावा अन्य जनमाध्यमों की वर्तमान भी न्यूनाधिक पहुंच हो पाई हैं। शोध अध्ययन के अंतर्गत उद्देश्य की प्राप्ति के लिए साक्षात्कार अनुसूची के भाग 2 के अंतर्गत प्रश्न संख्या 2 के अंतर्गत विभिन्न जनसंचार माध्यमों के बारे में अलग–अलग प्रश्नों के माध्यम से टेलीविजन के अलावा अन्य जनसंचार माध्यमों की पहुॅच के बारे में जानने का प्रयास किया गया है। शोध के उद्देश्य की प्राप्ति के लिए उत्तरदाताओं से समाचार–पत्र, पत्रिका, रेडियो, कम्प्यूटर, इंटरनेट के साथ कम्प्यूटर, इंटरनेट के साथ मोबाईल एवं टेलीविजन केबल अथवा सेटेलाईट कनेक्शन आदि जनसंचार माध्यमों की पहुॅच का पता लगाने का प्रयास किया गया हैं। प्रस्तुत शोध अध्ययन से पता चला है कि मीणा जनजातीय माडा क्षेत्र के कुल 646 उत्तरदाताओं में से केवल 18.00 प्रतिशत लोगों के घरों में समाचार–पत्र की पहुॅच देखी गई है, जबकि वर्तमान दौर में भी 82.00 प्रतिशत ग्रामीण मीणा जनजाति के लोगों के पास समाचार–पत्र नहीं पहुॅच पाये हैं। इसके साथ ही पत्रिका की पहुॅच संबंधी प्रश्न की प्रतिक्रिया के रूप में

केवल 6.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कहना है कि उनके घर पर पत्रिका की पहुॅच है, जबकि अधिकांश 94.00 प्रतिशत लोगों तक अभी भी पत्रिका की पहुॅच नहीं हो पाई हैं। वहीं रेडियो की बात की जाये तो इसकी पहुॅच अधिकांश 67.00 प्रतिशत मीणा जनजाति के उत्तरदाताओं के पास हो गई हैं, केवल 33.00 प्रतिशत लोगों के पास रेडियो की सुविधा उपलब्ध नहीं पाई गई हैं। इसी प्रकार अध्ययन क्षेत्र में कम्प्यूटर की 1.7 प्रतिशत लोगों तक पहुॅच देखी गई हैं, जबकि 98.3 प्रतिशत लोगों तक अभी तक कम्प्यूटर नहीं पहुॅच पाया हैं। शोध से यह भी पता चला है कि 37.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं तक इंटरनेट के साथ मोबाईल की पहुॅच हो गई हैं, जबकि 63.00 प्रतिशत तक अभी इसकी पहुॅच नहीं हो पाई हैं। इसी साथ शोध क्षेत्र से यह जानकारी भी मिलती है कि वहॉ अधिकांश 51.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास टेलीविजन केबल अथवा सेटेलाईट कनेक्शन की उपलब्धता हो गई हैं, जबकि 49.00 प्रतिशत लोगों तक इसकी पहुॅच अभी भी होना शेष हैं। इस प्रकार कहा जा सकता है कि घर पर जनसंचार माध्यमों की पहुॅच एवं उत्तरदाताओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति के बीच महत्वपूर्ण संबंध ($\chi 2$ =3.401, पी = 0.018) देखा जा सकता हैं।

शोध से यह भी निकलकर आया है कि शोध क्षेत्र में जनसंचार माध्यमों की पहुॅच न्यूनाधिक रूप से पाई गई है, साथ ही पी वैल्यू 0.05 से कम प्राप्त हुई है इसलिए शोध के लिए बनाई गई प्रथम शून्य परिकल्पना मीणा जनजातीय समुदाय में टेलीविजन के अलावा अन्य जनसंचार माध्यमों की कोई पहुॅच नहीं है, को निष्कासित किया जाएगा एवं वैकल्पिक परिकल्पना मीणा जनजातीय समुदाय में टेलीविजन के अलावा अन्य जनसंचार माध्यमों की महत्वपूर्ण पहुॅच है, को स्वीकार किया जायेगा।

प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए प्रयुक्त शोध प्रविधि के माध्यम से शोध क्षेत्र के मीणा जनजातीय समुदाय के लोगों द्वारा जनमाध्यमों (टेलीविजन) को देखने के व्यावहारिक स्वरूप का पता लगाने का प्रयास किया गया है। शोध अध्ययन के अंतर्गत इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए साक्षात्कार अनुसूची के भाग 3 के अंतर्गत प्रश्न संख्या 3, 4, 5, 6, 7, 8 एवं प्रश्न संख्या 9 के अंतर्गत विभिन्न प्रश्नों के माध्यम से शोध में शामिल कुल 646 उत्तरदाताओं की टेलीविजन कार्यक्रमों को देखने की आदतों एवं व्यवहार का पता लगाने का प्रयास किया गया है। इन प्रश्नों के माध्यम से उत्तरदाताओं के द्वारा टेलीविजन कार्यक्रमों को देखने की पंसद, देखने का समय, देखने की पसंदीदा भाषा, देखने का उद्देश्य आदि का पता लगाने का प्रयास किया गया है। शोध से ज्ञात हुआ है कि मीणा जनजातीय समुदाय के ज्यादातर लोग टेलीविजन कार्यक्रमों को देखने में खूब समय व्यतित करते हैं, साथ ही वे ज्यादातर अपने परिवार के साथ ही टेलीविजन देखते हैं। मीणा जनजातीय समुदाय के लोग सबसे ज्यादा हिन्दी भाषा के कार्यक्रम ही पसंद करते है क्योंकि उनकी स्वयं की भाषा में कार्यक्रमों का बहुत अधिक अभाव हैं इसलिए वे उन्हीं भाषाओं में टेलीविजन देखने को मजबूर हैं। मीणा जनजातीय समुदाय के ज्यादातर लोगों का कहना है कि वे टेलीविजन कार्यक्रमों को सूचना, समाचार, शिक्षा, एवं मनोरंजन प्राप्त करने के उद्देश्य से देखते हैं। इस

प्रकार कहा जा सकता है कि टेलीविजन कार्यक्रमों की विषयवस्तु एवं उत्तरदाताओं का टेलीविजन देखने के पसंदीदा कार्यक्रम के बीच एक महत्वपूर्ण संबंध ($\chi 2$ =8.245, पी = 0.017) पाया गया है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में मीणा जनजातीय समुदाय के सामाजिक–सांस्कृतिक स्वरूप में आने वाले परिवर्तन में जनमाध्यमों की भूमिका का अध्ययन शोध प्रविधि के द्वारा किया गया है। शोध से पता चला है कि मीणा जनजातीय समुदाय की परंपरागत सामाजिक–सांस्कृतिक व्यवस्था में परिवर्तन करने में जनमाध्यमों की भूमिका न्यूनाधिक मात्रा में पाई गई हैं जिसकों साक्षात्कार अनुसूची के भाग 4 के अंतर्गत प्रश्न संख्या 10, 11, एवं प्रश्न संख्या 12 के अंतर्गत विभिन्न प्रश्नों के माध्यम से शोध में शामिल कुल 646 उत्तरदाताओं से पता करने का प्रयास किया गया है। शोध से ज्ञात हुआ है कि मीणा जनजातीय समुदाय के अधिकांश लोगों का कहना हैं कि टेलीविजन कार्यक्रमों की विषयवस्तु ने न्यूनाधिक मात्रा में उनके सामाजिक–सांस्कृतिक सुधार, जागरूकता एवं उत्थान में टेलीविजन की महत्वपूर्ण भूमिका को माना हैं। उनका कहना है कि उनके समुदाय में शिक्षा, स्वास्थय, सामाजिक–सांस्कृतिक प्रथाओं, कुरीतियों, अंधविश्वासों, सामाजिक चेतना, सामाजिक–सांस्कृतिक सुधार, रोजगार के विकल्पों की जानकारी, राजनैतिक चेतना, सरकारी योजनाओं की जानकारी नये विचारों का सृजन, अन्य संस्कृतियों एवं समाजों से परिचित, रहन–सहन में सुधार, परिवार नियोजन के प्रति जागरूक करने के साथ ही उनके जीवन शैली में सुधार लाने एवं जागरूक करने में टेलीविजन की महत्वपूर्ण भूमिका हैं। इस प्रकार कहा जा सकता है कि टेलीविजन की विषयवस्तु एवं मीणा जनजातीय समुदाय के सामाजिक–सांस्कृतिक सुधार, जागरूकता एवं उत्थान में एक महत्वपूर्ण संबंध ($\chi 2$ =1.419, पी = 0.017) पाया गया है।

शोध से यह भी निकलकर आया है कि शोध क्षेत्र में जनसंचार माध्यमों की मीणा जनजातीय समुदाय के सामाजिक–सांस्कृतिक सुधार, जागरूकता एवं उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका पाई गई है, साथ ही पी वैल्यू 0.05 से कम प्राप्त हुई है इसलिए शोध के लिए बनाई गई द्वितीय शून्य परिकल्पना मीणा जनजाति के सामाजिक–सांस्कृतिक परिवर्तन में जन माध्यमों (टेलीविजन) की कोई महत्वपूर्ण भूमिका नहीं है, को निष्कासित किया जाएगा एवं वैकल्पिक परिकल्पना मीणा जनजाति के सामाजिक–सांस्कृतिक परिवर्तन में जन माध्यमों (टेलीविजन) की कोई महत्वपूर्ण भूमिका है, को स्वीकार किया जायेगा।

प्रस्तुत शोध अध्ययन के अंतर्गत मीणा जनजातीय समुदाय के पारंपरिक सामाजिक–सांस्कृतिक स्वरूप में आने वाले परिवर्तन में जनमाध्यमों के प्रभाव का अध्ययन करने के लिए शोध प्रविधि के अंतर्गत साक्षात्कार अनुसूची, अनौपचारिक वार्तालाप एवं गैर–सहभागिता अवलोकन के माध्यम से मीणा जनजातीय माडा क्षेत्र में जनसंचार माध्यमों प्रभावों का पता लगाने का प्रयास किया गया है। शोध से यह पता चला है कि मीणा जनजातीय समुदाय की पारंपरिक सामाजिक–सांस्कृतिक व्यवस्था पर टेलीविजन के न्यूनाधिक प्रभाव पड़े हैं। शोध अध्ययन के अंतर्गत उद्देश्य की प्राप्ति के लिए साक्षात्कार अनुसूची के भाग 5 के अंतर्गत प्रश्न

संख्या 13, 14, 15, 16, 17 18, 19, 20, 21, 22, 23, 24, 25, 26, 27, 28, 29, 30, 31, 32, 33 एवं 34 के अंतर्गत विभिन्न सामाजिक–सांस्कृतिक प्रभावों के बारे में अलग–अलग प्रश्नों के माध्यम से टेलीविजन के प्रभाव के चलते आने वाले परिवर्तन के बारे में जानने का प्रयास किया गया है। शोध से यह ज्ञात हुआ है कि मीणा जनजातीय समुदाय के घरेलू एवं व्यक्तिगत कार्यों, परिवार के पारंपरिक स्वरूप, महिलाओं की स्थिति, ऋण के स्रोतों, उपभोग व्यय, आपसी बातचीत, मेल–जोल, जीवन शैली, सामाजिक व्यवहार, भाषा, जन्म संस्कार, विवाह संस्कार, त्यौहार, उत्सव, धार्मिक विश्वास, मेलों, सामाजिक प्रथाओ एवं कुरीतियों, राजनैतिक विश्वासों व व्यवस्था, सामूहिकता की भावना, आर्थिक व्यवस्था, पारंपरिक पंचायत का स्वरूप एव प्रभाव, रीति–रिवाजों आदि पर टेलीविजन की विषय वस्तु का नकारात्मक एवं सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि टेलीविजन की विषय वस्तु एवं मीणा जनजातीय समुदाय की सामाजिक–सांस्कृतिक संरचना में परिवर्तन पर प्रभाव में महत्वपूर्ण संबंध पाया गया है।

शोध से यह भी निकलकर आया है कि शोध क्षेत्र में जनसंचार माध्यमों की मीणा जनजातीय समुदाय के सामाजिक–सांस्कृतिक व्यवस्था में परिवर्तन पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा है, साथ ही पी वैल्यू 0.05 से कम प्राप्त हुई है इसलिए शोध के लिए बनाई गई तृतीय एवं चतुर्थ शून्य परिकल्पनाओं को क्रमशः मीणा जनजाति के सामाजिक–सांस्कृतिक परिवर्तन में (जन्म, विवाह, मृत्यु, त्यौहार एवं मेलों संबंधी परम्परागत रीति–रिवाजों के संबंध में) जन माध्यमों (टेलीविजन) का कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं है। एवं टेलीविजन देखने के कारण परिवार के सदस्यों, दोस्तों, पड़ोसियों एवं समाज के साथ बातचीत एवं आपसी मेल–जोल पर महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं पड़ता है, को निष्कासित किया जाएगा एवं वैकल्पिक परिकल्पना मीणा जनजाति के सामाजिक–सांस्कृतिक परिवर्तन में (जन्म, विवाह, मृत्यु, त्यौहार एवं मेलों संबंधी परम्परागत रीति–रिवाजों के संबंध में) जन माध्यमों (टेलीविजन) का कोई महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। एवं टेलीविजन देखने के कारण परिवार के सदस्यों, दोस्तों, पड़ोसियों एवं समाज के साथ बातचीत एवं आपसी मेल–जोल पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है, को स्वीकार किया जायेगा।

शोध का परिणाम

1. उत्तरदाताओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति संबंधी जानकारी का परिणाम

   शोध अध्ययन में शामिल कुल 646 उत्तरदाताओं में से 42.41 प्रतिशत पुरूषों एवं 57.59 प्रतिशत महिलाओं हैं, जिनमें से अधिकांश 71.2 प्रतिशत 30–50 आयु के एवं 28.78 प्रतिशत 50 से अधिक आयु के उत्तरदाता हैं। शोध अध्ययन से यह भी ज्ञात हुआ है कि शोध में शामिल कुल 646 उत्तरदाताओं में 30.49 प्रतिशत निरक्षर है, जबकि अधिकांश 34.52 प्रतिशत उत्तरदाता प्राथमिक/उच्चप्राथमिक स्तर तक शिक्षित है, वहीं 29.72 प्रतिशत उत्तरदाता माध्यमिक/उच्च माध्यमिक स्तर तक शिक्षित है, जबकि 5.25 प्रतिशत उत्तरदाता स्नातक/परास्नातक तक पढ़े–लिखें पाये गये हैं।

- शोध अध्ययन में शामिल कुल 646 उत्तरदाताओं में से 18.42 प्रतिशत किसान हैं, वहीं अधिकांश 31.58 प्रतिशत ग्रहणी हैं, 6.66 प्रतिशत नौकरी करते हैं, 17.49 प्रतिशत मजदूरी करते हैं, 7.28 प्रतिशत व्यापार करते हैं, जबकि 18.58 अन्य व्यवसायों में लगें हुए हैं। शोध अध्ययन से उत्तरदाताओं की पारिवारिक वार्षिक आय के बारे यह जानकारी पता चलती है कि कुल 646 उत्तरदाताओं में से 16.87 प्रतिशत की 1 लाख से कम वार्षिक आय हैं, 28.48 प्रतिशत की 1 से 2 लाख के बीच में वार्षिक आय हैं, 23.07 प्रतिशत की 2 से 3 लाख वार्षिक आय हैं, 14.24 प्रतिशत की 3 से 5 लाख के बीच में वार्षिक आय हैं, जबकि 17.34 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार की 5 लाख से अधिक वार्षिक आय हैं। शोध अध्ययन के दौरान अनौपचाकिर वार्तालाप एवं गैर–सहभागी अवलोकन से यह भी पता चला है कि सभी उत्तरदाताओं की आर्थिक स्थिति कहीं न कहीं उन लोगों से तुलनात्मक रूप से थोड़ी बहुत ठीक पाई गई हैं, जिन लोगों के घर में टेलीविजन की सुविधा नहीं पाई गई हैं।
- शोध अध्ययन से यह ज्ञात हुआ है कि शोध में शामिल कुल 646 उत्तरदाताओं में से अधिकांश 57.59 प्रतिशत का परिवार संयुक्त हैं, जबकि 42.41 प्रतिशत का परिवार एकल हैं। अनौपचारिक वार्तालाप से यह ज्ञात हुआ है कि मीणा जनजातीय समुदाय में टेलीविजन कार्यक्रमों की विषय–वस्तु के प्रभाव के चलते न्यूनाधिक मात्रा में संयुक्त परिवारों का विघटन हो रहा हैं और लोग एकल परिवारों में रहना पसंद करने लगे हैं।

2. जनसंचार माध्यमों की पहुंच संबंधी जानकारी का परिणाम :

- प्रस्तुत शोध अध्ययन से पता चलता है कि मीणा जनजातीय समुदाय में पिछले कुछ दशकों से आधुनिक संचार के विभिन्न माध्यमों की पहुंच एवं उपलब्धता कुछ हद तक बढ़ी है। शोध अध्ययन में शामिल कुल 646 उत्तरदाताओं से प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण से पता चलता है कि मीणा जनजाति के लोगों तक सबसे अधिक पहुंच रेडियो (67 प्रतिशत) की है, वहीं टेलीविजन केबल/सेटेलाईट कनेक्शन की पहुंच (51 प्रतिशत) भी ठीक–ठाक है। इसके अलावा शोध अध्ययन से पता चला है कि कुछ हद तक उन तक समाचार पत्र, पत्रिका, कम्प्यूटर, इंटरनेट के साथ मोबाईल जैसे माध्यमों की पहुंच भी न्यनाधिक है।
- शोध अध्ययन में शामिल मीणा जनजाति के कुल 646 उत्तरदाताओं से मिली प्रतिक्रिया से ज्ञात हुआ है कि मीणा जनजाति के लगभग 29.8 प्रतिशत लोग 3 घंटे से अधिक समय विभिन्न जनमाध्यमों का रोजाना देखने के लिए उपयोग कर रहे हैं। वहीं 3 घंटे से कम समय तक जनमाध्यमों का उपयोग करने वाले 71.2 प्रतिशत उत्तरदाता पाये गये है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि जनमाध्यमों से उनकी जीवन शैली, सामाजिक–सांस्कृतिक व्यवस्था, पर्व–त्यौहार आदि पर न्यूनाधिक प्रभाव पड़ रहा है और इन सभी पक्षों में परिवर्तन हो रहा है।

- शोध से यह भी निकलकर आया है कि विभिन्न जनमाध्यमों रेडियो, समाचार पत्र, पत्रिका, इंटरनेट, टेलीविजन, सिनेमा आदि में से टेलीविजन को सबसे अधिक (56 प्रतिशत) उत्तरदाता अपना सबसे पसंदीदा जनमाध्यम मानते हैं, वहीं बाकी उत्तरदाता अन्य माध्यमों को पसंद करते हैं। इसको अपना सबसे पसंदीदा जनमाध्यम मानने का कारण इसका श्रव्य–दृश्य होने के साथ ही निरक्षर या कम पढ़े–लिखें लोग भी न्यूनाधिक मात्रा में इसकी विषय वस्तु को आसानी से समझ पाने में सक्षम होते है।

3. टेलीविजन देखने का व्यावहारिक स्वरूप का परिणाम :

- शोध अध्ययन से यह भी ज्ञात हुआ है कि मीणा जनजाति के शोध में शामिल कुल 646 उत्तरदाताओं में से लगभग 18.11 प्रतिशत उत्तरदाताओं के घरों में टेलीविजन की पहुॅच 15 वर्ष पहले हो गई थी। लेकिन अधिकांश मीणा जनजाति के लोगों के घरों (81.89 प्रतिशत) में टेलीविजन की पहुॅच 5 वर्ष पूर्व या उसके बाद हुई हैं। शोध के दौरान अनौपचारिक वार्तालाप से यह पता चला है कि जयपुर में टेलीविजन के 1977 में आ जाने के बाद भी मीणा जनजाति के अधिंकाश 81.89 प्रतिशत लोगों तक इसकी पहुंच वर्तमान से कुछ ही वर्ष पूर्व होने के कई कारण बताये गये हैं, जिनमें उनका ग्रामीण, पहाड़ी, गरीबी एवं दुर्गम क्षेत्रों में रहने के साथ ही टेलीविजन का अधिक खर्चीला एवं बिजली की कम उपलब्धता होना भी रहा है। हांलाकि वर्तमान में इन लोगों तक बिजली, शिक्षा एवं अन्य यातायात सुविधाओं के पहुंचने से इन तक टेलीविजन की पहुंच में भी वृद्धि देखी गई हैं।
- शोध से यह भी जानकारी प्राप्त होती है कि मीणा जनजाति के शोध में शामिल कुल 646 उत्तरदाताओं में से अधिकांश 37.04 प्रतिशत लोगों द्वारा उनके पसंदीदा टेलीविजन कार्यक्रमों के अनुसार उनके व्यक्तिगत एवं घरेलू कार्यों को करने के लिए समय निकालने की योजना न्यूनाधिक मात्रा में प्रायः बनाई जाती हैं, वहीं कभी–कभी अपने समय की योजना बनाने वाले लोगों में 31. 01 प्रतिशत लोग है। बाकि के लोग या तो कभी भी योजना नहीं बनाते या तटस्थ है। अनौपचारिक वार्तालाप से पता चला है टेलीविजन पर उनका पसंदीदा कार्यक्रम देखते समय वो अपने आवश्यक कार्य भी कभी–कभी उसी समय न करके बाद में करते हैं। इस प्रकार पसंदीदा टेलीविजन कार्यक्रमों एवं उत्तरदाताओं के व्यक्तिगत एवं घरेलू कार्यों को करने के समय की योजना के बीच एक महत्वपूर्ण संबंध ($\chi 2$ =4.823, पी = 0.021) देखा गया है।
- शोध अध्ययन से यह भी जानकारी मिली है कि शोध में शामिल कुल 646 उत्तरदाताओं में से अधिंकाश 44.07 प्रतिशत लोग केवल ओर केवल टेलीविजन की विषय सामग्री को मनोरंजन प्राप्त करने एवं समय व्यतित करने के उद्देश्य के लिए देखते हैं, वहीं 28.01 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन की विषय सामग्री को सूचना, शिक्षा एवं मनोरंजन तीनों के लिए देखते हैं। जबकि

केवल सूचना/समाचार या शिक्षा प्राप्त करने के लिए केवल 28.04 प्रतिशत उत्तरदाता ही टेलीविजन का उपयोग करते हैं। अनौपचारिक वार्तालाप से यह भी निकलकर आया है कि टेलीविजन पर दिखाई जाने वाली विषय वस्तु उनके समुदाय को सूचना, शिक्षा, एवं मनोरंजन देने के साथ ही विभिन्न प्रकार की आपराधिक, नैतिक पतन, अन्य संस्कृतियों की मान्यताएँ, विश्वास, परंपराएँ, तीज–त्यौहार, वेशभूषा आदि भी पहुंचा रहा है, जो उनके समुदाय की सामाजिक–सांस्कृतिक व्यवस्था को सकारात्मक एवं नकारात्मक रूप से परिवर्तित कर रही हैं।

- शोध अध्ययन में शामिल 646 उत्तरदाताओं की प्रतिक्रिया से पता चलता है कि टेलीविजन कार्यक्रमों को देखने की पसंदीदा भाषा में मीणा जनजाति के अधिकांश 62.03 प्रतिशत उत्तरदाता हिन्दी भाषा के कार्यक्रमों को ज्यादा देखना पसंद करते हैं, वहीं अंग्रेजी भाषा के टेलीविजन कार्यक्रमों को केवल 2.01 प्रतिशत उत्तरदाता ही हैं। जबकि राजस्थानी भाषा में टेलीविजन कार्यक्रमों को 29.03 प्रतिशत उत्तरदाता हैं। अनौपचारिक वार्तालाप से यह भी सामाने आया है कि इन भाषाओं में टेलीविजन कार्यक्रमों को देखना उनकी पसंद इसलिए बनी हैं, क्योंकि उनकी स्वयं की भाषा–बोली में टेलीविजन कार्यक्रमों का अभाव है, या दिखाये ही नहीं जाते हैं। इसलिए उन्हें मजबूरी में इन भाषाओं में ही टेलीविजन कार्यक्रमों को देखना पड़ता हैं।

4. मीणा जनजाति के सामाजिक–सांस्कृतिक स्वरूप में परिवर्तन में जनमाध्यमों (टेलीविजन) की भूमिका का परिणाम :

- शोध अध्ययन से यह जानकारी प्राप्त हुई है कि शोध में शामिल कुल 646 उत्तरदाताओं में से 10.00 प्रतिशत लोग ही उनके मीणा समुदाय के द्वारा आयोजित किये जाने वाले विभिन्न सामाजिक–सांस्कृतिक कार्यक्रमों को लोगों तक पहुंचानें में टेलीविजन की जनमाध्यम के रूप में बहुत ज्यादा या ज्यादा भूमिका मानते हैं, वहीं अधिंकाश 76.00 प्रतिशत लोगों का मानना है कि टेलीविजन की इस संबंध में बहुत कम या कम भूमिका हैं। जबकि 16.00 प्रतिशत उत्तरदाता इस संबंध तटस्थ राय प्रदान करते हैं। अनौपचारिक वार्तालाप से यह ज्ञात हुआ है कि शोध में शामिल मीणा जनजाति के कुल 646 उत्तरदाताओं में से अधिकांश 76.00 प्रतिशत का कहना हैं कि टेलीविजन के द्वारा उनके सामाजिक–सांस्कृतिक कार्यक्रमों को लोगों तक पहुंचाने में बहुत कम या कम भूमिका हैं। इसकी कम भूमिका के पीछे उनके समुदाय के लोगों की जनमाध्यमों में कम भागीदारी, उनकी भाषा में कार्यक्रमों की कमी, साथ ही उनके सामाजिक–सांस्कृतिक कार्यक्रमों का कवरेज नहीं किया जाना, उनके सामाजिक–सांस्कृतिक आयोजनों एवं कार्यक्रमों को कवरेज करके टीवी पर प्रसारित करने वाले मीडियाकारों का उनकी संस्कृति एवं समाज से अच्छी तरह से परिचित नहीं होना आदि विभिन्न मुख्य कारण पता चले हैं।
- शोध अध्ययन से यह जानकारी प्राप्त हुई है कि शोध में शामिल कुल 646 उत्तरदाताओं में से 21.21 प्रतिशत उत्तरदाता मानते हैं कि उनके मीणा समुदाय में व्याप्त विभिन्न प्रकार की

सामाजिक–सांस्कृतिक प्रथाओं व कुरीतियों के उन्मुलन में टेलीविजन की जनमाध्यम के रूप में बहुत ज्यादा या ज्यादा भूमिका हैं, वहीं अधिंकाश 65.63 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि टेलीविजन की इस संबंध में बहुत कम या कम भूमिका हैं। जबकि 13.16 प्रतिशत उत्तरदाता इस संबंध में तटस्थ राय प्रदान करते हैं। अनौपचारिक वार्तालाप से यह ज्ञात हुआ है कि शोध में शामिल मीणा जनजाति के कुल 646 उत्तरदाताओं में से 65.63 प्रतिशत का कहना हैं कि टेलीविजन के द्वारा उनमें व्याप्त सामाजिक–सांस्कृतिक प्रथाओं एवं कुरीतियों के उन्मूलन में बहुत कम या कम भूमिका हैं। इसकी कम भूमिका के पीछे टेलीविजन कार्यक्रमों की विषय वस्तु का भी न्यूनाधिक रूप से विभिन्न प्रकार प्रथाओं एवं कुरीतियों को दिखाना है, जिससे उनके समुदाय की प्रथाओं एवं कुरीतियों के उन्मूलन की वजाय उनमें कई नई प्रथाएं एवं कुरीतियां भी प्रवेश कर जा रही हैं फिर भी टेलीविजन कार्यक्रमों की विषय वस्तु ने मीणा जनजातीय समुदाय की कई प्रथाओं एवं कुरीतियों के उन्मूलन में न्यूनाधिक रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

- शोध अध्ययन से यह जानकारी प्राप्त हुई है कि शोध में शामिल कुल 646 उत्तरदाताओं में से अधिकांश 51.7 प्रतिशत उत्तरदाता मानते हैं कि उनके मीणा समुदाय में शिक्षा के प्रति जागरूकता लाने में टेलीविजन की जनमाध्यम के रूप में बहुत ज्यादा या ज्यादा भूमिका हैं, वहीं अधिंकाश 34.67 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि टेलीविजन की इस संबंध में बहुत कम या कम भूमिका हैं। जबकि 15.17 प्रतिशत उत्तरदाता इस संबंध में तटस्थ राय प्रदान करते हैं। अनौपचारिक वार्तालाप से यह ज्ञात हुआ है कि शोध में शामिल मीणा जनजाति के कुल 646 उत्तरदाताओं में से अधिकांश 51.7 प्रतिशत का कहना हैं कि टेलीविजन के द्वारा उनके समुदाय में शिक्षा के प्रति जागरूकता लाने में बहुत ज्यादा या ज्यादा भूमिका हैं। इसकी ज्यादा भूमिका के पीछे टेलीविजन कार्यक्रमों की विषय वस्तु का भी न्यूनाधिक रूप से विभिन्न प्रकार के शिक्षाप्रद एवं शैक्षिणिक कार्यक्रमों को दिखाना है, जिससे उनके समुदाय में शिक्षा के प्रति जागरूकता आई है।
- शोध अध्ययन से यह जानकारी प्राप्त हुई है कि शोध में शामिल कुल 646 उत्तरदाताओं में से 31.11 प्रतिशत उत्तरदाता मानते हैं कि उनके मीणा समुदाय के सामाजिक–सांस्कृतिक उत्सवों एवं कार्यक्रमों को प्रसारित करने में टेलीविजन की जनमाध्यम के रूप में बहुत ज्यादा या ज्यादा भूमिका हैं, वहीं अधिकांश 54.8 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि टेलीविजन की इस संबंध में बहुत कम या कम भूमिका हैं। जबकि 17.34 प्रतिशत उत्तरदाता इस संबंध में तटस्थ राय प्रदान करते हैं। अनौपचारिक वार्तालाप से यह ज्ञात हुआ है कि शोध में शामिल मीणा जनजाति के कुल 646 उत्तरदाताओं में से अधिकांश 54.8 प्रतिशत का कहना हैं कि टेलीविजन के द्वारा उनके सामाजिक–सांस्कृतिक उत्सवों एवं कार्यक्रमों को प्रसारित करने में बहुत कम या कम भूमिका हैं। इसकी कम भूमिका के पीछे टेलीविजन कार्यक्रमों की विषय वस्तु में मीणा जनजातीय समुदाय के सामाजिक–सांस्कृतिक उत्सवों, कार्यक्रमों का कम कवरेज किया जाना, उनका कम प्रसारण

किया जाना आदि कारण हैं, फिर भी टेलीविजन द्वारा न्यूनाधिक रूप में उनके समुदाय के उत्सव एवं कार्यक्रमों के प्रसारण में थोड़ी बहुत भूमिका निभाई है।

- शोध अध्ययन से यह जानकारी प्राप्त हुई है कि शोध में शामिल कुल 646 उत्तरदाताओं में से 40.1 प्रतिशत उत्तरदाता मानते हैं कि सरकार द्वारा संचालित विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं के बारे में जानकारी उपलब्ध करवाने में टेलीविजन की जनमाध्यम के रूप में बहुत ज्यादा या ज्यादा भूमिका हैं, वहीं अधिंकाश 49.07 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि टेलीविजन की इस संबंध में बहुत कम या कम भूमिका हैं। जबकि 10.84 प्रतिशत उत्तरदाता इस संबंध में तटस्थ राय प्रदान करते हैं। अनौपचारिक वार्तालाप से यह ज्ञात हुआ है कि शोध में शामिल मीणा जनजाति के कुल 646 उत्तरदाताओं में से 40.1 प्रतिशत का कहना हैं कि टेलीविजन के द्वारा सरकार द्वारा संचालित विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं के बारे में जानकारी उपलब्ध करवाने में बहुत ज्यादा या ज्यादा भूमिका हैं। इसकी ज्यादा भूमिका के पीछे टेलीविजन पर विभिन्न सरकारी योजनाओं का बार–बार प्रसारण करना है। फिर भी टेलीविजन द्वारा सभी सरकारी योजनाओं की स्पष्ट एवं पूर्ण जानकारी नहीं देने के कारण अधिकांश 49.07 उत्तरदाता इसकी कम भूमिका भी मानते हैं।
- इस प्रकार शोध से ज्ञात हुआ है कि मीणा समुदाय में सामाजिक–सांस्कृतिक सुधार, जागरूकता एवं उत्थान लाने में टेलीविजन की न्यूनाधिक भूमिका रही हैं। जिसके अंतर्गत मीणा जनजातीय समुदाय में सामाजिक चेतना का विकास करने, अंधविश्वासों में कमी करने, सामाजिक–सांस्कृतिक सुधार लाने, स्वच्छता के प्रति जागरूकता लाने, रोजगार के अन्य विकल्पों की जानकारी प्रदान करने, महिलाओं की सामाजिक–सांस्कृतिक स्थिति में सुधार लाने, राजनैतिक चेतना का विकास करने, आर्थिक विकास को बढ़ावा देने, आर्थिक स्थिति में सुधार लाने, समाचार/सूचना उपलब्ध करवाने, मनोरंजन करने, खाली समय के उपयोग करने, नये विचारों का सृजन करने, स्वतंत्र रूप से निर्णय लेने, मीणा समुदाय के लोकगीतो, लोकनृत्य, जैसी परम्परागत लोक कलाओं को प्रसारित करने, पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक करने, नई कृषि तकनीकों की जानकारी देने, मीणा समुदाय के पद दंगल, मेलों को प्रसारित करने, परिवार नियोजन को अपनाने, खानपान में सुधार करने, रहन–सहन में सुधार करने एवं वेशभूषा में सुधार करने आदि के प्रति जागरूक करने, सुधार करने एवं प्रसारित करने में थोड़ी बहुत भूमिका पाई गई हैं, लेकिन अनौपचारिक वार्तालाप से यह भी पता चला है कि टेलीविजन कार्यक्रमों में बहुत ढूढ़ने पर ही मीणा समुदाय के सामाजिक–सांस्कृतिक एवं अन्य पक्षों से संबंधी विषय वस्तु देखने को मिल पाती हैं। इस प्रकार कहा जा सकता है कि मीणा जनजाति में सामाजिक–सांस्कृतिक जागरूकता, सुधार एवं उत्थान एवं टेलीविजन की भूमिका के बीच एक महत्वपूर्ण संबंध ($\chi 2$ =1.419, पी = 0.017) है।

5. मीणा जनजाति के सामाजिक–सांस्कृतिक स्वरूप में परिवर्तन में जनमाध्यमों (टेलीविजन) का प्रभाव का परिणाम :

- शोध अध्ययन से यह ज्ञात हुआ है कि शोध में शामिल सभी 646 उत्तरदाताओं में से अधिकांश 53.00 प्रतिशत लोगों का कहना है कि टेलीविजन देखने से उनके व्यक्तिगत एवं घरेलू कार्यों पर बहुत ज्यादा या ज्यादा प्रभाव पड़ता हैं, वहीं 36.00 प्रतिशत उत्तरदाता मानते हैं कि टेलीविजन देखने से उनके व्यक्तिगत एवं घरेलू कार्यों पर बहुत कम या कम प्रभाव पड़ता हैं। जबकि 11.00 प्रतिशत उत्तरदाता इस संबंध तटस्थ राय प्रदान करते हैं। शोध क्षेत्र से आंकड़ों का संकलन करने के दौरान अनौपचारिक वार्तालाप से यह भी पता चला है कि मीणा जनजाति के अधिकांश 53.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं के व्यक्तिगत एवं घरेलू कार्य इसलिए प्रभावित होते हैं, क्योंकि जब टेलीविजन पर उनका पसंद का धारावाहिक, फिल्म, समाचार या अन्य टीवी कार्यक्रम प्रसारित हो रहा होता है, तो वे उसके देखने में इतने तल्लीन हो जाते हैं कि वे उनके व्यक्तिगत एवं घरेलू कार्यों को समय पर करना छोड़कर टीवी देखने में न्यूनाधिक रूप से लगे रहते हैं। इस प्रकार टेलीविजन देखने की आदत एवं घरेलू कार्यों के बीच एक महत्वपूर्ण संबंध ($\chi 2$ =4.514, पी = 0.021) देखा जा सकता हैं।
- शोध से यह पता चलता है कि शोध अध्ययन में शामिल सभी 646 उत्तरदाताओं में से अधिकांश 64.01 प्रतिशत लोगों को लगता है कि उनके परिवार के पारम्परिक स्वरूप में टेलीविजन के चलते बहुत ज्यादा या ज्यादा परिवर्तन आया हैं, वहीं 21.20 प्रतिशत उत्तरदाता मानते हैं कि टेलीविजन के चलते उनके परिवार के पारम्परिक स्वरूप में बहुत कम या कम परिवर्तन आया हैं। जबकि 13. 77 प्रतिशत उत्तरदाता इस संबंध में अपनी तटस्थ राय प्रदान करते हैं। शोध के दौरान अनौपचारिक वार्तालाप से पता चलता है कि शोध अध्ययन में शामिल कुल उत्तरदाताओं में से अधिकांश 64. 01 प्रतिशत को उनके परिवार के पारम्परिक स्वरूप में परिवर्तन को अपनी स्वयं की भाषा में इस प्रकार बताते हैं : ''पैल्या तो घरखा इकटा रेवचा पर आजकाल तो ठौर–ठौर रेबा लाग्य, टीवी का चाल्य लाग्य रेह छ सारा दिन छौरा–छोरी जैसु घर में पैल्याली रौनक खौ गी छ, टीवी देख–देख क बड़ा–बूढ़ा क सामै् बौल्य छ छौटा–मौटा घरखा, टीवी देख–देख क छौरा–छोरी पढ़बै भी लाग्य छ, कुटुम्ब छोटो होबो लाग्गो, छौरा–छोरया का ब्याह मोड़ो करबै लाग्य, घरखा नया–नया हुनर पाल्या'' अर्थात पहले इनके परिवार एक जगह एक ही घर में रहते थे, परंतु अब ये लोग अलग–अलग जगह घर बनाकर रहने लगे है जिससे संयुक्त परिवार की परंपरा कहीं न कहीं पीछे छूटती जा रही हैं। साथ ही युवक–युवतियों का पूरे दिन टीवी के पास चिपके रहने से घर में पहले वाली चहल–पहल नहीं होती हैं, टीवी देखकर घर के छोटे–बड़े सदस्य बड़े–बूढ़ों का मान सम्मान करना न्यूनाधिक मात्रा में कम कर दे रहे हैं, टीवी देखकर घर के लड़के–लड़किया पढ़ने भी लगे हैं, पहले की तुलना में परिवार का आकार छोटा होने लगा हैं, बच्चों की शादी भी पहले की अपेक्षा देरी से की जाने लगी हैं, परिवार के लोग नयी–नयी रूचियॉ रखने लगे हैं। इस

प्रकार कहा जा सकता है कि टेलीविजन देखने की आदत एवं परिवार के पारम्परिक स्वरूप में परिवर्तन के बीच एक महत्वपूर्ण संबंध ($\chi 2$ =4.708, पी = 0.031) पाया गया हैं।

- शोध अध्ययन से यह भी पता चला है कि शोध में शामिल सभी उत्तरदाताओं में से अधिकांश 49. 33 प्रतिशत का कहना है कि उनके परिवार में प्रचलित अंधविश्वासों में बहुत ज्यादा या ज्यादा परिवर्तन हुआ हैं, वहीं 39.32 प्रतिशत का इस संबंध में कहना है कि उनके परिवार में प्रचलित अंधविश्वासों में बहुत कम या कम परिवर्तन हुआ हैं, जबकि 11.46 प्रतिशत उत्तरदाता इस संबंध तटस्थ दिखाई दिए हैं। शोध के दौरान अनौपचारिक वार्तालाप से यह भी पता चला है कि मीणा जनजाति के अधिकांश उत्तरदाताओं का कहना है कि टेलीविजन से उनके प्रचलित अंधविश्वासों में परिवर्तन हुआ है, साथ ही टेलीविजन से उनके अंदर कई नये अंधविश्वास भी शामिल हो गये हैं, जिनमें शादी–शुदा महिला का मंगलसूत्र टूटने पर उसके पति की मृत्यु का डर, जलता दिपक बुझ जाने से कुछ अनहोनी होने का डर आदि जैसे ओर भी अंधविश्वास मीणा जनजाति के लोगों में बढ़ गए हैं। उनका यह भी कहना है कि उनके कुछ अंधविश्वास दूर भी हुए हैं, जैसे किशोर युवतियों के मासिक धर्म पर अंधविश्वास प्रचलित था कि उसकों इस दौरान घर कि पवित्र चीजों से दूर रखा जाता था।
- शोध से यह भी निकलकर आया है कि सभी 646 उत्तरदाताओं में से अधिकांश 50.93 प्रतिशत का कहना है कि उनके परिवार में महिला की परंपरागत स्थिति में बहुत ज्यादा या ज्यादा परिवर्तन हुआ हैं, वहीं 31.43 प्रतिशत का कहना है कि उनके परिवार में महिला की परंपरागत स्थिति में बहुत कम या कम परिवर्तन हुआ हैं, जबकि 17.65 प्रतिशत उत्तरदाता इस संबंध में तटस्थ राय प्रदान करते हैं। क्षेत्र अध्ययन के दौरान यह भी ज्ञात हुआ है कि मीणा जनजाति के अधिकांश लोगों का मानना हैं कि उनके परिवार में महिला की स्थिति पर टेलीविजन की विषय वस्तु का प्रभाव पड़ा हैं, उनके अनुसार परंपरागत रूप से परिवार की महिलाए घर के कार्य, बच्चों को पालना, खेती करना, पशुपालन, जंगल से लकड़ियां लाना, आदि कार्य करती थी, जिससे उसकी आर्थिक, शैक्षणिक, राजनैतिक स्थिति न्यूनाधिक रूप से अच्छी नहीं थी, परंतु वर्तमान में परिवार में लड़कियॉ इन सभी कार्यों के साथ ही पढ़ाई–लिखाई, नौकरीपेशा, मजदूरी, राजनीति आदि में भी न्यूनाधिक रूप से भाग लेने लगी हैं। इसके पीछे कहीं न कहीं न्यूनाधिक रूप से टेलीविजन पर दिखाई जाने वाली पढ़ी–लिखी महिलाऍं, नौकरीपेशा करने वाली महिलाओं का भी प्रभाव दिखाई देता हैं।
- शोध अध्ययन से यह ज्ञात हुआ है कि शोध में शामिल सभी 646 उत्तरदाताओं में से अधिकांश 40.87 प्रतिशत लोगों का कहना है कि टेलीविजन कार्यक्रमों के प्रसिद्ध पात्रों का उनकी जीवन शैली पर बहुत ज्यादा या ज्यादा प्रभाव पड़ता हैं, वहीं 39.79 प्रतिशत उत्तरदाता मानते हैं कि टेलीविजन कार्यक्रमों के प्रसिद्ध पात्रों का उनकी जीवन शैली पर बहुत कम या कम प्रभाव पड़ता

हैं। जबकि 19.35 प्रतिशत उत्तरदाता इस संबंध तटस्थ राय प्रदान करते हैं। शोध क्षेत्र से आंकड़ों का संकलन करने के दौरान अनौपचारिक वार्तालाप से यह भी पता चला है कि मीणा जनजाति के अधिकांश 40.87 प्रतिशत उत्तरदाताओं की जीवन शैली पर टेलीविजन कार्यक्रमों के प्रसिद्ध पात्रों के प्रभाव के चलते परिवर्तित हो रही हैं, क्योंकि जब टेलीविजन पर उनका पसंद का धारावाहिक, फिल्म, समाचार या अन्य टीवी कार्यक्रम में उनके पसंद के पात्र की जीवन शैली दिखाई जाती है तो न्यूनाधिक रूप से इन उत्तरदाताओं की जीवन शैली के विभिन्न पक्षों पर प्रभाव पड़ता है, जिनमें उनके कपड़े पहनने के तौर तरीकों, भोजन की आदतों, सामाजिक व्यवहार, पारिवारिक संबंधों, बातचीत के तरीकों, आभूषण पहनने के तरीकों एवं भाषा आदि में परिवर्तन आ रहा हैं। इस प्रकार टेलीविजन कार्यक्रमों के प्रसिद्ध पात्रों की जीवन शैली का प्रभाव एवं उत्तरदाताओं की जीवन शैली में परिवर्तन के बीच एक महत्वपूर्ण संबंध ($\chi 2$ =5.407, पी = 0. 022) देखा जा सकता हैं।

- शोध अध्ययन से यह ज्ञात हुआ है कि शोध में शामिल सभी 646 उत्तरदाताओं में से अधिकांश 59.6 प्रतिशत लोगों का कहना है कि टेलीविजन कार्यक्रमों की विषय वस्तु के कारण उनके पारम्परिक रीति–रिवाजों में बहुत ज्यादा या ज्यादा परिवर्तन आया हैं, वहीं 26.93 प्रतिशत उत्तरदाता मानते हैं कि टेलीविजन कार्यक्रमों की विषय वस्तु के कारण उनके पारम्परिक रीति–रिवाजों में बहुत कम या कम परिवर्तन आया हैं। जबकि 13.47 प्रतिशत उत्तरदाता इस संबंध तटस्थ राय प्रदान करते हैं। शोध क्षेत्र से आंकड़ों का संकलन करने के दौरान अनौपचारिक वार्तालाप से यह भी पता चला है कि मीणा जनजाति के अधिकांश 59.6 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कहना है कि टेलीविजन कार्यक्रमों की विषय वस्तु के कारण उनके पारम्परिक रीति–रिवाजों में बहुत ज्यादा या ज्यादा परिवर्तन आया हैं। इस प्रकार टेलीविजन कार्यक्रमों की विषय–वस्तु का प्रभाव एवं पारंपरिक रीति–रिवाजों में परिवर्तन के बीच एक महत्वपूर्ण संबंध ($\chi 2$ =5.997, पी = 0.037) देखा जा सकता हैं।
- शोध से यह भी निकलकर आया है कि सभी 646 उत्तरदाताओं में से अधिकांश 45.03 प्रतिशत का कहना है कि मीणा जनजातीय समुदाय में शिशु–जन्म संस्कार पर किये जाने वाले विभिन्न प्रकार के पारम्परिक रीति–रिवाजों में टेलीविजन कार्यक्रमों की विषय–वस्तु के कारण बहुत ज्यादा या ज्यादा परिवर्तन हुआ हैं, वहीं 39.93 प्रतिशत का कहना है कि उनके समुदाय में शिशु–जन्म संस्कार पर किये जाने वाले विभिन्न प्रकार के पारम्परिक रीति–रिवाजों में टेलीविजन कार्यक्रमों की विषय–वस्तु के कारण बहुत कम या कम परिवर्तन हुआ हैं, जबकि 15.01 प्रतिशत उत्तरदाता इस संबंध में तटस्थ राय प्रदान करते हैं। मीणा जनजातीय समुदाय की शिशु के जन्म होने पर की जाने वाली विभिन्न परंपराओं पर टेलीविजन कार्यक्रमों की विषय–वस्तु का न्यूनाधिक प्रभाव

दिखाई देता हैं, जिसके अंतर्गत मीणा जनजातीय समुदाय की शिुश जन्म संस्कार संबंधी औलाण गाड़ने, नामकरण करने, सात्या लगाने, कुऑ पूजन करने, जामणा भरने, बाल मुण्डन करवाने, ढूण्ढ़ लाने, लोकगीत, लोकनृत्य, लोकवाद्य बजाने, धार्मिक विश्वास व मान्यताऍं, दान–पुण्य करने, जननी के खानपान, प्रसव करवाने के स्थान एवं समुदाय के पटेलों की भूमिका आदि में न्यूनाधिक परिवर्तन आया हैं। इस प्रकार टेलीविजन कार्यक्रमों की विषय–वस्तु का प्रभाव एवं मीणा जनजातीय समुदाय में शिशु जन्म संस्कार संबंधी परंपराओं एवं मान्यताओं में परिवर्तन के बीच एक महत्वपूर्ण संबंध ($\chi 2$ =3.617, पी = 0.019) देखा जा सकता है।

- शोध से यह भी निकलकर आया है कि सभी 646 उत्तरदाताओं में से अधिकांश 48.3 प्रतिशत का कहना है कि मीणा जनजातीय समुदाय में विवाह संस्कार पर किये जाने वाले विभिन्न प्रकार के पारम्परिक रीति–रिवाजों में टेलीविजन कार्यक्रमों की विषय–वस्तु के कारण बहुत ज्यादा या ज्यादा परिवर्तन हुआ हैं, वहीं 43.34 प्रतिशत का कहना है कि उनके समुदाय में विवाह संस्कार पर किये जाने वाले विभिन्न प्रकार के पारम्परिक रीति–रिवाजों में टेलीविजन कार्यक्रमों की विषय–वस्तु के कारण बहुत कम या कम परिवर्तन हुआ हैं, जबकि 8.36 प्रतिशत उत्तरदाता इस संबंध में तटस्थ राय प्रदान करते हैं। मीणा जनजातीय समुदाय की विवाह संस्कार पर की जाने वाली विभिन्न परंपराओं पर टेलीविजन कार्यक्रमों की विषय–वस्तु का न्यूनाधिक प्रभाव दिखाई देता हैं, जिसके अंतर्गत मीणा जनजातीय समुदाय के विवाह संस्कार संबंधी विवाह के लिए लड़का–लड़की देखने व चुनने, संगाई करने, लगन झलने, तेल चढ़ाने व राखी बांधने, मांडा देने व चाक पूजने, बारात जाने, बारात का स्वागत एवं विदाई करने, फैंरे लेने, वधु की विदाई व स्वागत करने, पग–फेरा करने, गौना करने, लोकगीत, लोकनृत्य करने, वेशभूषा व आभूषण पहनने, सजावट करने, गौत्र मिलाने, वधु मूल्य या दहेज देने, सहभागिता व सहयोग करने, सगे–संबंधियों की भूमिकाओं एवं समुदाय के पटेलों की भूमिका आदि में न्यूनाधिक परिवर्तन आया हैं। इस प्रकार टेलीविजन कार्यक्रमों की विषय–वस्तु का प्रभाव एवं मीणा जनजातीय समुदाय में विवाह संस्कार संबंधी परंपराओं एवं मान्यताओं में परिवर्तन के बीच एक महत्वपूर्ण संबंध ($\chi 2$ =4.451, पी = 0.021) देखा जा सकता है।
- शोध से यह भी निकलकर आया है कि सभी 646 उत्तरदाताओं में से अधिकांश 44.43 प्रतिशत का कहना है कि मीणा जनजातीय समुदाय में मृत्यु संस्कार पर किये जाने वाले विभिन्न प्रकार के पारम्परिक रीति–रिवाजों में टेलीविजन कार्यक्रमों की विषय–वस्तु के कारण बहुत ज्यादा या ज्यादा परिवर्तन हुआ हैं, वहीं 45.97 प्रतिशत का कहना है कि उनके समुदाय में मृत्यु संस्कार पर किये जाने वाले विभिन्न प्रकार के पारम्परिक रीति–रिवाजों में टेलीविजन कार्यक्रमों की विषय–वस्तु के कारण बहुत कम या कम परिवर्तन हुआ हैं, जबकि 9.60 प्रतिशत उत्तरदाता इस संबंध में

तटस्थ राय प्रदान करते हैं। मीणा जनजातीय समुदाय में किसी व्यक्ति की मृत्यु हो जाने पर की जाने वाली विभिन्न परंपराओं पर टेलीविजन कार्यक्रमों की विषय–वस्तु का न्यूनाधिक प्रभाव दिखाई देता हैं, जिसके अंतर्गत मीणा जनजातीय समुदाय की मृत्यु संस्कार संबंधी अंतिम संस्कार करने, तीये की बैठक करने, अस्थियों(फूल) के पवित्र जल स्रोत में प्रवाहित करने, नाहन करने, कीर्तन करने, मृत्युभोज देने, पाकड़ी बांधने(उत्तराधिकारी बनाने), बरसोत करने, हात्थ निकालने, कर्मकाण्ड करने, सहभागिता करने, मौताणा की रकम देने व लेने एवं समुदाय के पटेलों की भूमिका आदि में न्यूनाधिक परिवर्तन आया हैं। इस प्रकार टेलीविजन कार्यक्रमों की विषय–वस्तु का प्रभाव एवं मीणा जनजातीय समुदाय में मृत्यु संस्कार संबंधी परंपराओं एवं मान्यताओं में परिवर्तन के बीच एक महत्वपूर्ण संबंध ($\chi 2$ =5.451, पी = 0.029) देखा जा सकता है।

- शोध से यह भी निकलकर आया है कि सभी 646 उत्तरदाताओं में से अधिकांश 56.96 प्रतिशत का कहना है कि मीणा जनजातीय समुदाय के परंपरागत त्यौहारों एवं उत्सवों के पारम्परिक स्वरूप में टेलीविजन कार्यक्रमों की विषय–वस्तु के कारण बहुत ज्यादा या ज्यादा परिवर्तन हुआ हैं, वहीं 36.53 प्रतिशत का कहना है कि उनके समुदाय के परंपरागत त्यौहारों एवं उत्सवों के पारम्परिक स्वरूप में टेलीविजन कार्यक्रमों की विषय–वस्तु के कारण बहुत कम या कम परिवर्तन हुआ हैं, जबकि 6.50 प्रतिशत उत्तरदाता इस संबंध में तटस्थ राय प्रदान करते हैं। मीणा जनजातीय समुदाय के परंपरागत त्यौहारों एवं उत्सवों के पारम्परिक स्वरूप पर टेलीविजन कार्यक्रमों की विषय–वस्तु का न्यूनाधिक प्रभाव दिखाई देता हैं, जिसके अंतर्गत मीणा जनजातीय समुदाय में त्यौहार एवं उत्सव पर तैयारी करने, मनाने की विधियों, सजावट के तौर–तरीकों, उल्लास एवं रौनक, घर में मांडना, रंगोली व चित्र बनाने की विधि, मादक पदार्थों के सेवन करने, आपसी मतभेद दूर करने, लोकगीतो, लोकनृत्य, लोकवाद्य, लोककलाएं करने, लोगों से मिलन–जुलने के अवसरों, आभूषण एवं वेशभूषा पहनने, सामाजिक मान्यताओं, परंपराओं व पूर्व संस्कारों, समाजोत्थान के उद्देश्यों, पारिवारिक, सामाजिक व राष्ट्रीय एकता को प्रगाढ़ करने एवं दान देने व सत्कर्म करने आदि में न्यूनाधिक परिवर्तन आया हैं। इस प्रकार टेलीविजन कार्यक्रमों की विषय–वस्तु का प्रभाव एवं मीणा जनजातीय समुदाय के त्यौहार एवं उत्सव संबंधी परंपराओं एवं मान्यताओं में परिवर्तन के बीच एक महत्वपूर्ण संबंध ($\chi 2$ =3.921, पी = 0.027) देखा जा सकता है।

- शोध से यह भी निकलकर आया है कि सभी 646 उत्तरदाताओं में से 14.09 प्रतिशत का कहना है कि उनके समुदाय की परंपरागत पंचायत के प्रभाव में टेलीविजन के कारण वृद्धि आई हैं, वहीं अधिकांश 71.52 प्रतिशत का कहना है कि उनके समुदाय की परंपरागत पंचायत के प्रभाव में कमी आई हैं, जबकि 7.43 प्रतिशत उत्तरदाता इस संबंध में कहते हैं कि उनके समुदाय की परंपरागत पंचायत का प्रभाव पूर्ववत हैं, जबकि 6.97 प्रतिशत उत्तरदात इस संबंध में तटस्थ राय

प्रदान करते हैं। इसके साथ ही मीणा जनजातीय समुदाय की परंपरागत पंचायत के सामाजिक–सांस्कृतिक क्षेत्र में प्रभाव में भी कहीं न कहीं कमी आई है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि मीणा जनजातीय समुदाय की परंपरागत पंचायत के प्रभाव एवं टेलीविजन की विषय–वस्तु के बीच एक महत्वपूर्ण संबंध ($\chi 2$ =1.164, पी = 0.021) देखा जा सकता है।

- इस प्रकार वर्तमान समय में भी प्रभुत्वशाली वर्ग के लोगों द्वारा संचालित आधुनिक जनसंचार माध्यमों (टेलीविजन) ने मीणा आदिवासी समुदाय की पारंपरिक सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनैतिक, वाचिक, एवं संचारिक परंपराओं और मान्यताओं में असंतुलन को बढ़ाया है। मीणा आदिवासी समुदाय टेलीविजन के लिए उन प्रभुत्वशाली वर्ग पर आश्रित है, इसलिए मीणा आदिवासी समुदाय को जो आवाज मिलती है, वह इन जातियों के दृष्टिकोण से मिलती है। प्रभुत्वशाली वर्ग के लोग अपनी इच्छानुसार टेलीविजन समाचार एवं अन्य विषयवस्तु उन्हें प्रेषित करते हैं और मीणा आदिवासी समुदाय की आवाज उनके अपने क्षेत्र में ही सिमट कर रह जाती है। प्रभुत्वशाली वर्ग एवं मीणा आदिवासी समुदाय के बीच सूचना प्रवाह में बहुत बड़ा असंतुलन है। सामाजिक–सांस्कृतिक अभिव्यक्ति की दिशा में भी नयी वैज्ञानिक और औद्योगिक तकनीकी से इन असमानताओं में वृद्धि ही होती जा रही हैं। वर्तमान समय में साम्राज्यवादी एवं वर्गीय हितों को दृष्टिगत रखकर ही समाचारों एवं अन्य विषयवस्तु को तोड़ मरोड़ कर मीणा जनजातीय समुदाय में भी प्रस्तुत किया जाता है। वर्तमान में मीणा जैसे विकासशील आदिवासी समुदायों में इंटरनेट आधारित संचार प्रणाली और मीडिया के आने से सूचनाओं के प्रवाह पर असर तो पड़ा है लेकिन इस पर भी प्रभुत्वशाली वर्ग का ही आधिपत्य है और वह अपने हितों को ध्यान में रखकर ही इसको संचालित करता है। प्रभुत्वशाली वर्ग अपनी संस्कृति और बाजार को आगे बढ़ाने का अनवरत प्रयास कर रहा है। पर कुछ मीणा आदिवासी लोगों की जागरूक संस्थाएँ और लोग इस पर प्रतिक्रिया भी व्यक्त कर रहे हैं।

सुझाव

मीणा जनजाति की परंपरागत सामाजिक–सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित किया जाना चाहिए। संरक्षण के अंतर्गत मीणा जनजाति के ऐसे कलाकारों की मदद की जानी चाहिए जो सदियों से परंपरागत सामाजिक–सांस्कृतिक लोक कलाओं को संजोकर जीवित रखे हुए हैं। मीणा जनजाति की परंपरागत सामाजिक–सांस्कृतिक लोक विरासत एवं लोक कलाओं को संरक्षित करने के लिए जनमाध्यमों एवं सरकारों को वृतचित्र या दस्तावेजीकरण कार्यक्रमों सहित कई आयोजन किए जाने चाहिए जिससे लुप्त होती लोक कलाओं एवं संस्कृति को समय रहते संरक्षित किया जा सके। शोध क्षेत्र में टेलीविजन के अलावा अन्य जनमाध्यमों समाचार–पत्र, पत्रिका, रेडियो, इंटरनेट के साथ मोबाईल, कम्प्यूटर आदि विभिन्न संचार माध्यमों की उपलब्धता एवं पहुंच भी न्यूनाधिक रूप से पाई गई हैं। इसलिए निर्धारित

शोध क्षेत्र में इन जनसंचार माध्यमों की भूमिका एवं प्रभाव आदि के बारे में भावी शोध अध्ययन किये जा सकते हैं। जिससे मीणा जनजातीय समुदाय के सामाजिक–सांस्कृतिक विकास में इन माध्यमों का प्रयोग किया जा सकें। आधुनिक समय में भी मीणा जनजातीय समुदाय से संबंधित विषयवस्तु का जनमाध्यमों (टेलीविजन) में सर्वथा कमी देखी जा सकती हैं। जनमाध्यमों को मीणाओं सहित अन्य आदिवासी समुदायों से संबंधित समाचारों, सूचनाओं, घटनाओं को पर्याप्त स्थान देना चाहिए। जनजातीय संस्कृति एवं समुदाय की लोककला, लोकनृत्य, लोकगीत, लोकचित्रकला, मेलों, उत्सवों, सामूहिक आयोजनों आदि से संबंधित समाचारों एवं सूचनाओं को भी उचित तरीकें से यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया जाना चाहिए। मीणा जनजातीय समुदाय की संस्कृति की विभिन्न विशिष्टताओं एवं विशेषताओं को सम्मान देना चाहिए। उनके समुदाय की मान्यताओं, परंपराओं एवं विश्वासों का सम्मान किया जाना चाहिए। मीणा जनजातीय समुदाय को उनके सामाजिक–सांस्कृतिक परिवेश से अलग करने की कोशिशें नहीं होनी चाहिए। वह जहॉ रहें, अपने तरीके से रहें, ताकि उनकी सामाजिक–सांस्कृतिक परंपरा एवं अच्छे आचरण, विचार, मान्यताएं, विश्वास एवं गुण लुप्त न हो जाएं। जनजातीय समुदाय में परसंस्कृतिककरण की प्रक्रिया को रोकना चाहिए। मीणा जनजातीय समुदाय के सामाजिक–सांस्कृतिक विश्वास, परंपराएं एवं धार्मिक मान्यताएं बाहरी हस्तक्षेप से मुक्त होने चाहिए।